संग्राम-सिंधु गाथा

प्रथम खंड

अर्थला

विवेक कुमार

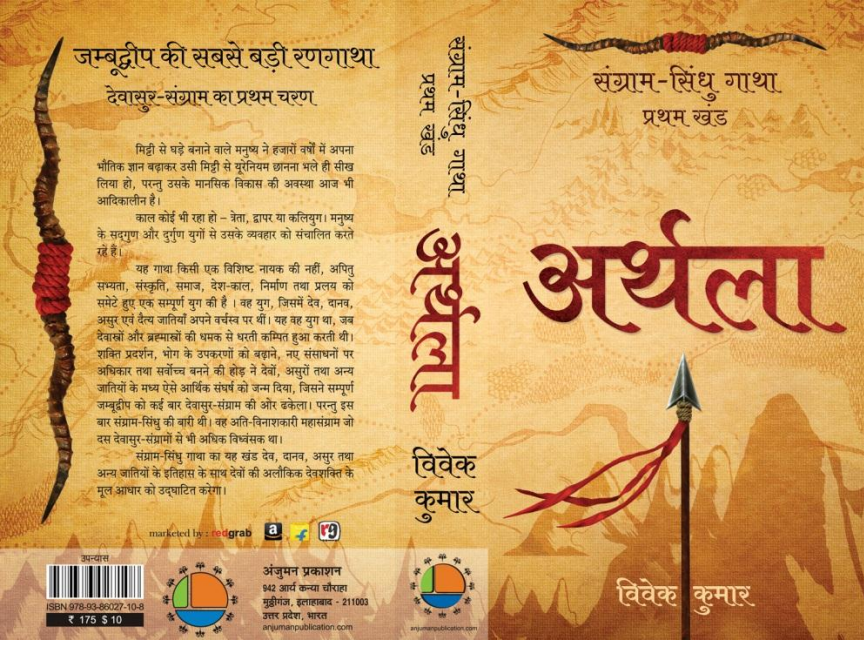

“यह किसी विशिष्ट नायक की जीवन-यात्रा नहीं ,अपितु सभ्यता, संस्कृति, समाज, देश-काल, निर्माण तथा प्रलय को समेटे हुए एक सम्पूर्ण युग की वीर गाथा है।”

“ यह स्त्री के रूप वैभव की नहीं ,
उसके लौह भुजदंडो की गाथा है।”

उत्तर
पश्चिम
पूर्व
दक्षिण
संथार
अर्थला
मुंद्रा
कुंडार
अमरखंड

अर्थला

उपन्यास

विवेक कुमार

अंजुमन प्रकाशन

इलाहाबाद

आवरण व कम्प्यूटर कम्पोजिंग : श्री कम्प्यूटर्स
मुद्रक : भार्गव ऑफसेट, इलाहाबाद
संस्करण : प्रथम, जून 2016
© : विवेक कुमार

प्रकाशक :
अंजुमन प्रकाशन
942, मुठ्ठीगंज, इलाहाबाद-3 उत्तर प्रदेश, भारत

मूल्य भारत में ₹ 175
मूल्य विदेश में $ 10

Edition: First, 2016
Price in india ₹ 175
Price for out side india $ 10

Published By : ANJUMAN PRAKASHAN
website - anjumanpublication.com
E-mail : contact@anjumanpublication.com

दो शब्द

यह कथा किसी पुराण में नहीं मिलेगी। यह मेरी कथा है। मैं आपको कोई लोकप्रचलित इतिहास बताने नहीं जा रहा। मैं आपको, मेरी कल्पना के धरातल पर खड़ा करना चाहता हूँ। वह कल्पना जो मुझे प्रेरित करती है, उत्तेजित करती है, नई सुगंध देती है और इस संसार को देखने का एक विस्तृत, निष्पक्ष और सुन्दर दृष्टिकोण सौंपती है।

इस कथा में मैंने वही संसार रचा है जो मेरे आस-पास प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चलता है, मात्र कालखंड परिवर्तित किया है। यह वह कालखंड था जिसमें मेरी कल्पना के विस्तार के लिए पर्याप्त अवसर थे। मनुष्य युगों पूर्व का हो या वर्तमान का, मानवीय गुण-धर्म में कुछ अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है।

देव, असुर, दानव, दैत्य और राक्षस जैसे मिथकीय पात्रों की रोमांचक कल्पनाएँ मैं बचपन से ही किया करता था। जब कुछ बड़ा हुआ, कुछ ज्ञान बढ़ा, तब उनकी मुखाकृति और रंग-रूप से आगे बढ़ते हुये उनके समाज, विचार, व्यवहार, आपसी संबंध और युद्धशास्त्र के विषय में तार्किक गणना करने लगा। कल्पना को मैं इस सृष्टि की सबसे बड़ी ऊर्जा मानता हूँ। इसी कल्पना के धरातल को पीढ़ी-दर-पीढ़ी ठोस करते हुये मानव सभ्यता आज इस विकास चिन्ह को छू पायी है।

मेरे मन में भी इसी कल्पना ने एक युग के धरातल का निर्माण किया। उनकी सभ्यता, संस्कृति और समाज का ढांचा खड़ा किया। पूर्व युगीन पात्रों को बनाया और उनके आपसी संबंधो को जोड़ा।

यह किसी नायक की जीवनयात्रा नहीं है। यह एक सम्पूर्ण युग की वीर-गाथा है। इस गाथा के विषय में मैं आपको इस पृष्ठ पर कुछ विशेष नहीं बताऊंगा। वास्तव में, मैं आपको अपनी गाथा सुनाने के लिए अति उत्साही हूँ। इसे रचते समय जितना मैंने सीखा और रोमांचित हुआ, आशा करता हूँ आप उससे अधिक ग्रहण करेंगे।

एक अकल्पित युग की यात्रा के लिए मैं आपको आमंत्रित करता हूँ।

- विवेक कुमार

विधान

6300 वर्ष पहले भी सूर्य उसी प्रकार उगा करता था, जैसे कि आज। उगते सूर्य के प्रकाश में विधान ने अपने शरीर को देखा। पिछले छः वर्षों के कठिन शस्त्राभ्यास ने उसके शरीर को बलिष्ठ बना दिया था। उसका वक्ष चौड़ा, भुजाएं स्नायुबद्ध, पिंडलियाँ मजबूत तथा जंघाएं ठोस हो गयी थीं। इतने वर्षों में उसने लगभग हर प्रकार के शस्त्र चलाना सीख लिया, विशेषकर तलवार और भाला।

चढ़ते सूर्य का नरम ताप उसके शरीर को गुनगुना आराम पहुंचा रहा था। वह आँगन में खड़ा होकर माँ की पूजा समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगा। माँ आँगन के मध्य स्थापित तुलसी पर जल चढ़ा रही थीं, उनकी पूजा समाप्त होने में अभी समय था। उसने सोचा जब तक माँ की पूजा समाप्त होगी तब तक नये घड़ों को बाहर निकाल दूँ। वह रसोईं के बगल वाली कोठरी से मिट्टी के नये घड़ों को निकाल कर आंगन में रखने लगा। पूरे गाँव में विधान के पिता ही एकमात्र कुंभकार थे, उनकी मृत्यु के पश्चात् उसकी माँ ही घड़े बनाती थी। माँ ने भरसक प्रयास किया कि वह भी उस कार्य में लग जाए, परन्तु उसमें योद्धा बनने की उत्तेजना समायी हुई थी। योद्धा बनकर ही वह अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य पूरा कर सकता था।

उसने अंतिम घड़ा भी बाहर निकाल कर रख दिया और पालथी मारकर वहीं बैठ गया। माँ की पूजा समाप्त हो चुकी थी, तुलसी के सामने प्रार्थना करने के पश्चात् सूर्य को अर्ध्य दिया, मंत्रपाठ किया, तुलसी की कुछ पत्तियों को तोड़ा और लाकर विधान के मुंह में डाल दिया। माँ पुनः मंत्रपाठ बुदबुदाते हुये रसोईं में चली गयीं।

माँ के रसोईं में जाते ही आँगन के बाहर एक बैलगाड़ी आकर रुकी, उसमें से एक मोटा-ताजा जंतु प्रकट हुआ। दो पैरों तथा विशाल उदर वाले उस जंतु ने अपने सिर पर पतले सरकंडो से बनी एक छोटी डलिया को उल्टा करके पहन रखा था। उसके एक हाथ में लकड़ी का लट्टू और दूसरे हाथ में सूत की पतली डोरी थी। वह शांत भाव से बिना कुछ बोले विधान के पास आकर खड़ा हो गया। यह विधान का चचेरा भाई सत्तू था। सत्तू ने लट्टू पर डोरी लपेटी, फिर भूमि पर पटक कर झटके से डोरी खींच ली, लट्टू सपाट भाव से नाचने लगा। उसने डोरी से फंदा बनाकर लट्टू को हवा में उछाला और अपनी दाईं हथेली पर ले लिया, लट्टू पुनः उसी सपाट भाव से घूमने लगा, फिर बाएँ हाथ से सिर की डलिया

उतारकर, वह धीरे से विधान के समीप बैठ गया।

कुछ क्षणों तक नाचते लट्टू को घूरने के बाद सत्तू ने कहा - ''तो अंततः वह क्षण आ ही गया।''

विधान ने एक मुस्कान के रूप में हामी भरी।

''तो, गुरु-दक्षिणा में क्या माँगा है गुरु जी ने?'' सत्तू ने पूछा।

''गुरु काण ने इस संदर्भ में कभी कोई संकेत नहीं दिया।'' विधान ने कहा।

''वैसे, तुम्हारी क्या इच्छा है? भईया!''

अपनी इच्छा के बारे में सोच कर विधान का ताप बढ़ने लगा, कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद भौंहे सिकोड़ कर बोला - ''मेरी इच्छा तो उस नीच सुदास का मुंड है, परन्तु गुरु काण तो प्रतिशोध को विष समझते हैं।''

सत्तू को लगा उसने गलत विषय छेड़ दिया, अतः विषय बदलते हुये कहा, ''भईया! तुम व्यर्थ में अपना ताप मत बढ़ाओ, यह बताओ कि भोजन में क्या बना है? घर से खा कर चला था, परन्तु लगता है उदर में कोई बैठा है जो उदर को तृप्त ही नहीं होने देता।''

विधान शांत रहा, उसने स्वयं को स्वस्थ किया। उगते सूर्य की ओर देखा, फिर मुस्कुराने का प्रयास करते हुये कहा - ''तुम्हारा प्रिय भोजन बना है।''

''निमोना'', सत्तू ने प्रसन्नता से आंखे बड़ी करते हुए कहा।

''हाँ, पेट भर कर खाना।'' विधान उसकी पीठ को ठोंक कर उठते हुए बोला।

विधान के ठोंकने से लट्टू हथेली से गिर पड़ा। सत्तू ने लट्टू उठाकर अपनी धोती में बांध लिया। विधान ने आँगन में नीम के वृक्ष से बंधी अपनी दुलारी गाय शांति को चारा डालते हुए पूछा, ''आज प्रातः ही सिर पर डलिया धारण कर कहाँ जा रहे हो?''

''माँ ने महुआ बीनने भेजा है। माँ, पिता जी को भड़काती रहती है कि मैं दिनभर केवल लट्टू नचाता रहता हूँ और कार्यों में हाथ नहीं बंटाता, मैं कार्यों में रूचि लूँ इसलिए महुआ बीनने भेज दिया ..... भला महुआ बीनकर कार्यों में रूचि कैसे उत्पन्न हो सकती है?'' सत्तू ने नाक सिकोड़कर कहा।

''चाची तो मात्र प्रयास कर रही हैं कि तू छोटे-छोटे कार्यों से आदत डाले,'' विधान बोला।

''मेरा जन्म महुआ बीनने के लिए नहीं हुआ है।'' सत्तू ने गरदन ऊँची करके कहा।

''तो महान् सत्तू का जन्म किस उद्देश्य के लिए हुआ है?'' विधान ने मुस्कुराते हुए पूछा।

सत्तू ने नीले आकाश की ओर हाथ उठा कर, वक्ष फुलाकर गर्व से कहा - ''एक दिन मैं सम्राट बनूँगा, यह सम्पूर्ण धरा मेरी दासी होगी और मेरी कीर्ति से दिशाएं गूंजेंगी ...''

''हे महावीर! आप तो धरती फाड़ देगें,'' विधान ने हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर भयभीत होने का अभिनय करते हुए कहा।

''मेरा परिहास न करो, भईया!''

''परन्तु महाराज! आप तो कृषक के पुत्र हैं, राजनीति शास्त्र का प्रथम अक्षर सुना भी न होगा और शस्त्र-शिक्षा भी आपने मेरे साथ मात्र एक वर्ष तक ही ली है, फिर यह सब कैसे करेंगे आप ....?''

''जब अयोध्या का राजा दासपुत्र होते हुए राजा बन सकता है, तो मैं क्यों नहीं,'' सत्तू ने इतने गर्वीले होकर कहा मानों उसकी भुजाओं में वीरता दौड़ रही हो।

विधान ने उसकी पिलपिली भुजाओं को दबाकर बनावटी उपालंभ देते हुए कहा - ''कथन तो एकदम सत्य है, परन्तु हे महाप्रतापी! हर महान् कथा के पीछे बहुत सारे कर्म तथा परिश्रम होते हैं और अपनी कल्पना को साकार करने के लिए अभी तक आपने क्या परिश्रम किया है?''

सत्तू थोड़ा झेंप गया। बोला, ''बस उसी पर विचार करते-करते मैं दुर्बल और चिंताग्रस्त हो गया हूँ।''

विधान ने उसके हांड़ी जैसे उदर और चमचमाते हुए प्रसन्न मुख को देखा, दोनों ही स्थानों पर दुर्बलता और चिंता की रेखाओं की झलक भी न मिली।

''ले! भोजन कर और अपनी दुर्बलता दूर कर,'' माँ रसोईं से बाहर निकलते हुए बोलीं और दोनों को निमोना परोस दिया।

सत्तू ने बड़ी माँ के पांव छुए और भोजन पर टूट पड़ा। भोजन करते हुए सत्तू ने रहस्यमय ढंग से आँखें तिरछी कर कहा - ''भ्रांतियाँ फैल रहीं हैं कि भेड़ाक्ष जम्बूद्वीप लौटने वाले हैं।'' (जम्बूद्वीप - भारतवर्ष का प्राचीन नाम)

''कौन! वे दैत्य जातियां?''

''हाँ! वही, कहते हैं जब वे आक्रमण करते हैं, तब न छुपने की जगह मिलती है, न भागने की, अधीनता स्वीकारने के लिए मात्र एक अवसर देतें हैं, यदि स्वीकार कर ली, तो उन्हीं की संस्कृति अपनानी होती है और यदि नहीं की तो अगले ही क्षण मुंड, रुंड से अलग हो जाता है।''

''जन्म से ही सुनता आ रहा हूँ, दैत्य वापस आ रहे हैं। पिछले तीन सौ वर्षों से किसी ने उन्हें देखा तक नहीं, संभवतः अब तक वे जीवित ही न हो .....और तुझे किसका भय ....तू तो सम्राट बनने वाला है.....खदेड़ कर रख देना उन दैत्यों

को..।'' विधान उसकी पीठ ठोंकता हुआ बोला।

सत्तू ने मुस्करा कर तिरछी नजरों से अपने बड़े भाई की ओर देखा और कुछ न बोला। दोनों के भोजन कर लेने के पश्चात् माँ ने सत्तू से कहा - ''तू एकदम उचित समय पर आया है पुत्र! अन्यथा मैं तुझे बैलगाड़ी सहित बुलाने के लिए विदु (विधान) को भेजने ही वाली थी।''

''मुझे स्मरण था बड़ी माँ! कि आज आप घड़े बेचने मेले में जायेंगी, अतः बैलगाड़ी सहित ही आया हूँ।''

विधान ने आकाश की ओर देखा, सूर्य पूरा उदय हो चुका था, उसने माँ से कहा - ''माँ! मैं आश्रम जा रहा हूँ, आज महत्वपूर्ण दिवस है, लौटने में रात्रि हो सकती है।''

फिर उसने शांति की ओर संकेत कर कहा - ''आजकल इसका व्यवहार बदल गया है, आलसी हो गयी है, पहले जितनी उद्दंड न रही ...सत्तू को देखने पर सींग भी नहीं दिखाया और इसका उदर फूलता जा रहा है ..लगता है गर्भिणी है।''

माँ ने मुस्कुराते हुए शांति के उदर को सहलाया और कुछ न बोलीं। सत्तू ने सबसे दृष्टि चुराकर एक बार अपना उदर देखा, फिर शांति का। विधान ने आँगन का दरवाजा खोला और गुरु काण के आश्रम की ओर अपने पग बढ़ा दिए।

***

ऋतुराज वसंत पूरे उफान पर था। वृक्ष नई पत्तियों का अपनी संतानों की भांति स्वागत कर रहे थे, पेड़-पौधे और पुष्प अपनी सुन्दरता दिखाने के लिए पूरा जोर लगाये हुए थे। इस ऋतु में पूरी प्रकृति रंगीन चादर ओढ़ लेती है। पुष्प वृक्षों के वस्त्र बन जाते हैं और मलय पर्वत की मादक पवन उन्हें झुलाती है। इसी मौसम में महुआ खूब गदराता है। समूचा वन महुआ की गंध से मदमस्त हो रहा था। वन में इधर, ग्रामवासी कभी-कभार ही आते थे, परन्तु वह पिछले पांच वर्षों से प्रतिदिन उस वन को पार कर गुरु काण के पास शस्त्र-शिक्षा के लिए आता रहा है।

वृक्षों पर पक्षी कलरव कर रहे थे, कपास के गोलों जैसे खरगोश फुदक रहे थे और विधान के चलने की आहट पाकर भाग जाते। तभी कोयल ने कूक लगाई। विधान ने भी प्रत्युत्तर में कूक लगाई। कोयल ने तुरंत प्रतियोगिता में शामिल होकर और जोर से कूक लगाई। विधान उसे चिढ़ाने के लिए बार-बार कूक लगाता और वह दंभी कोयल हर बार और जोर से कूकती। यह कूक प्रतियोगिता

तब तक चलती रही, जब तक कि वन का आखिरी छोर न आ गया। विधान ने अपनी ओर से कोयल को विजेता घोषित कर आगे की राह ली। आगे गन्ने का बहुत बड़ा खेत था, जिसे पार करते ही गुरु काण का आश्रम दिखने लगता था।

उसने कल्पना की- जब वह आश्रम पहुंचेगा, प्रतिदिन की भांति गुरु काण, आश्रम के मध्य स्थापित यज्ञ वेदी के सम्मुख ध्यान में बैठे मिलेंगे। वह उनके चरण स्पर्श करेगा और उनके सामने बैठ जायेगा। जब वह आंखे खोलेंगे तब वह उनके जैसा ही अभिनय करेगा और वह यह तब तक करेगा जब तक कि वे बनावटी रुष्ट न हो जाएँ, फिर वह उनसे उनकी कथा सुनेगा। हर बार पूछने पर वह टाल देते थे कि पांच वर्ष पहले वह अचानक से इस गाँव में कैसे प्रकट हो गये, परन्तु इस बार वह टाल नहीं पायेंगे क्योंकि उन्होंने स्वयं वचन दिया है कि गुरु-दक्षिणा के समय वह अपनी कथा अवश्य कहेंगे।

कल्पनाओं का मीठा रस पीकर वह प्रसन्न हो उठा। आश्रम जाने का मुख्य मार्ग गन्ने के खेत के बायीं ओर से था, परन्तु वह मार्ग बहुत लंबा था, अतः वह खेत के बीच से ही मार्ग बना कर जाता था। हर दिन की भांति उसने एक डंडा तोड़ा, ताकि खेत में छुपे हुए सियारों से सामना होने पर उन्हें भगा सके। मुख पर प्रसन्नता के चिन्ह लेकर वह खेत में घुस गया। आज वह एक सप्ताह बाद आश्रम जा रहा था। गुरु काण ने कहा था कि उन्हें कुछ आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हो रही हैं अतः वह कुछ दिनों का एकांतवास चाहते हैं।

न जाने वृद्धावस्था में ही आध्यात्मिक अनुभूतियाँ क्यों जोर मारने लगती हैं? विधान ने मन में सोचा। उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि आज एक भी सियार उसके सामने नहीं पड़ा। कुछ देर में खेत को पार कर जब उसने आश्रम का दृश्य देखा, तो सन्न रह गया।

दो सैनिकों ने गुरु काण को दोनों ओर से पकड़ रखा था और एक सैनिक उनके सामने धनुष पर बाण चढ़ाये था। कुछ अन्य सैनिक तलवार तथा भाले लेकर उन्हें घेरे हुए थे। एक सैनिक, जो संभवतः उनका नायक होगा, घोड़े पर बैठा हुआ घेरे के बाहर था। जब तक विधान को स्थिति समझ आती, सैनिक का बाण छूट चुका था। सनसनाता हुआ बाण गुरु काण के कंठ को भेदकर पार हो गया। कंठ से रक्त की धार फूटी, सैनिकों ने उनके शरीर को छोड़ दिया। गुरु काण का शरीर कटे वृक्ष की भांति भूमि पर गिर पड़ा।

विधान का मुख खुला रह गया। उसे लगा धरती हिल रही है या आकाश घूम रहा है। उसने चीखना चाहा, पर रुंधे हुये कंठ से आवाज नहीं निकली। उसके शरीर का ताप बढ़ने लगा, सांसों की गति और गहराई बढ़ गयी, आँखों में रक्त उतर आया, मुट्ठियाँ भिंच गयी। उसने फेफड़ो में हवा भरी और पूरी शक्ति

से चीखा। उसकी प्रचंड चीख से, पक्षी वृक्षों से उड़ गए, खरहे भयभीत होकर अपने छिद्रों में घुस गए, दूर के खेतों में छुपे सियार खेत छोड़कर भाग गए।

सैनिकों ने उसकी ओर देखा और अपने स्थानों पर शस्त्र लेकर चौकन्ने हो गये, परन्तु घोड़े पर बैठे नायक ने लापरवाह दृष्टि से उसकी ओर देखा और अपनी तलवार तक नहीं निकाली।

विधान चीखते हुये आश्रम की ओर बढ़ने लगा। झुरमुटों, काँटों तथा सरपतों के बीच से होता हुआ वह पूरी शक्ति से भागा जा रहा था। कांटे और तीखी सरपतें उसके शरीर को घायल कर रहीं थीं, परन्तु उसके लाल नेत्रों को मार्ग एकदम सीधा और निष्कंटक दिख रहा था। वह घेरे के बाहर, सबसे आगे, घोड़े पर बैठे नायक की ओर दौड़ा जा रहा था। दौड़ते-दौड़ते अचानक वह हवा में उछला। उसकी अमानवीय उछाल देखकर सैनिकों की आंखें विस्मय से फैल गयीं। वह हवा में, घोड़े की ऊँचाई से चार गुना ऊँचा उछला था। जब तक उनका विस्मय समाप्त होता, ऊपर से कूदते हुए विधान ने हवा में ही घोड़े पर बैठे नायक के मुख को लक्ष्य करके घूंसा चला दिया। वार बहुत प्रचंड था; नायक अचेत होकर घोड़े से गिर पड़ा। विधान ने उसकी कमर से लटकी तलवार खींच ली। बाकी के सैनिकों ने उसे घेर लिया। विधान चौकन्ना होकर चारों ओर देखने लगा। घेरा बनाये सैनिकों की दृष्टि आपस में मिली, फिर एक सैनिक के ऊपर सभी की दृष्टि रुक गयी। नेत्रों से कुछ संकेत हुए और वह सैनिक एक ओर भाग निकला।

विधान ने सैनिकों को ललकारा। तभी धनुष वाले एक सैनिक ने उसके कंठ को लक्ष्य करके बाण चला दिया। विधान फुर्ती से बायीं ओर होकर बच गया, परन्तु उसके पीछे खड़ा सैनिक वैसी फुर्ती नहीं दिखा सका और बाण सीधे उसके वक्ष में जा धंसा। जब तक सैनिक दूसरा बाण चला पता, विधान ने उसकी ओर तलवार फेंक मारी, हवा में घूमती तलवार उसकी छाती में गड़ गयी। विधान ने अपने पीछे बाण से आहत हुए सैनिक की तलवार ले ली और बाकी के सैनिकों को ललकारने लगा।

सैनिकों को आश्रम में इस प्रकार के प्रतिरोध की आशंका न थी। एक सैनिक क्रोध से दांत भींचे, तलवार लेकर उस पर टूट पड़ा। तलवार का वार रोकने के बजाय विधान एक ओर हट गया और अवसर पाकर उसका मुंड, रुंड से अलग कर दिया।

एक अज्ञात युवक का ऐसा युद्ध प्रदर्शन देखकर सैनिक सकते में आ गये। वे सभी एक साथ उस पर टूट पड़े।

युद्ध करते-करते विधान ने एक सैनिक का हाथ काट दिया, मृत्यु को समीप देखकर वह सैनिक भाग निकला। फिर विधान ने एक प्रंचड हुंकार भरी और बाकी

के सैनिकों को एक-एक करके मार गिराया। अंतिम सैनिक को उसने कंधे से उदर तक चीर डाला। उसका सारा शरीर सैनिकों के रक्त से नहाया हुआ था और वह प्रंचड क्रोध से काँप रहा था।

विधान ने रक्त से सनी तलवार फेंकी और भागकर गुरु काण के पास पहुंचा। उनके कंठ से सारा रक्त बह चुका था, उसने कांपते हाथों से गुरु का मस्तक उठाकर अपनी गोद में रखा। वह उनकी पथराई आँखों में एकटक झांकता रहा। उसका कंठ रुंधा हुआ था और होंठ कंपन कर रहे थे। उसने चारों ओर देखा सब कुछ धुंधलाता जा रहा था। उसने सूर्य की ओर देखा, वह आज भी उसी प्रकार निष्ठुर चमक रहा था जब उसके पिता की हत्या हुई थी। वह स्वयं ही नहीं समझ पा रहा था कि उसे दुःख अधिक है या क्रोध। तभी नायक ने आह भरी, वह धीरे-धीरे सचेत हो रहा था। विधान क्रोध से फुंफकारता हुआ उठा, नायक का पैर पकड़कर घसीटता हुआ ले जाकर एक वृक्ष के तने से बांध दिया फिर एक मृतक सैनिक का भाला उठाकर उसके वक्ष पर कोंचा। कुछ ही क्षणों में नायक पूरी तरह सचेत हुआ। चारों ओर मरे हुये सैनिकों को देखकर उसकी भौंहों पर क्रोध चढ़ गया, परन्तु सामने महाक्रोध में सने विधान को देखकर उसका क्रोध भय में बदल गया। विधान ने उसके वक्ष पर भाले को जोर से धंसाया और गरजकर पूछा - ''किसकी आज्ञा से?''

नायक ने सयंमित होकर कहा - ''युवराज सुदास की आज्ञा से।''

'सुदास.....' यह नाम सुनते ही विधान का ताप अधिकतम बिंदु तक पहुँच गया। ''फिर वही नीच'', उसका शरीर क्रोध से सुलग उठा। उसने अपनी भौंहें सिकोड़ी और एक झटके से भाला नायक के वक्ष के पार कर दिया। नायक के मुख ने रक्त उगला और सिर एक ओर लुढ़क गया।

विधान अपने गुरु की मृत देह देख रहा था, उसे लगा उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही है। वह बार-बार कल्पना कर रहा था कि गुरु काण अभी उठकर बैठ जायेंगे। उसे सत्य का भान था कि यह असंभव है, फिर भी वह कल्पना किये जा रहा था। कल्पना करते-करते वह शक्तिहीन पैरों से गुरु के पास पहुँचा और बगल में बैठ गया। उनके मुख पर हाथ फेरकर उनकी पथरायी आँखों को बंद किया। उसके ऊपर दुःख हावी होता जा रहा था। 'सुदास' आज तक उसने सुदास को कभी नहीं देखा था, मात्र नाम ही सुना था, परन्तु उसकी कल्पना ने उसके मस्तिष्क में सुदास का एक रेखाचित्र खींच रखा था, इस क्षण उसकी आँखों के सामने वही रेखाचित्र उभर रहा था। रेखाचित्र धुंधला था और धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा था, अचानक तेज हवा आयी और वह रेखाचित्र हवा में घुल गया। रुंधे कंठ से भर्रायी आवाज में वह जोर से चीखा और अपने गुरु के हृदय पर लुढ़क

गया।

सूर्य अपनी प्रंचड ऊष्मा से उसकी त्वचा जला रहा था, परन्तु उसे कुछ भी भान न हुआ। वह गुरु के हृदय से चिपटा बेसुध पड़ा रहा। उसे होश तब आया जब सूर्य थक-हार कर लौटने की तैयारी कर रहा था। उसके होंठ सूख चुके थे तथा शरीर के घाव दर्द कर रहे थे। वह धीरे से उठा और बेसुध नेत्रों से चारों ओर देखा - मरे हुए सैनिकों का रक्त भूमि पर सूख चुका था। आश्रम के कोने में बंधा गुरु काण का काला घोड़ा, जिसे प्रेम से वे 'मयूर' पुकारते थे, अपने बंधन छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा था।

विधान ने लंबी-लंबी सांसे भरकर अपनी शक्ति एकत्रित की और जा कर मयूर के बंधन खोल दिये। बंधन खुलते ही मयूर भागता हुआ गुरु काण के पास पहुंचा और चारों ओर घूम-घूम कर उन्हें सूंघने लगा।

विधान गुरु काण की कुटिया में घुसा। चारों ओर दृष्टि डाली; एक कोने में तलवार, भाला और कुछ शस्त्र रखे थे, दूसरे कोने में खूंटी पर कुछ वस्त्र टंगे थे और नीचे उसकी माँ के बनाये घड़ों में कुछ अनाज रखा था। वह तलवार, भाला, ढाल और घोड़े की काठी लेकर कुटिया के बाहर निकला। भारी कदमों से चलता हुआ गुरु काण के पास पहुंचा, उन्हें उठाया और कुटिया के अंदर लाकर लिटा दिया। खूंटी पर टंगी सफेद धोती उतारकर उनकी देह पर बिछा दी, गुरु के चरणों को मस्तक से लगाया, फिर उठकर बाहर आ गया। उसने कुटिया को आधार देने वाले बांसों को तोड़ डाला। आखिरी बांस को तोड़ते ही कुटिया की छत भरभरा कर गिर पड़ी। उसने अपनी धोती में बंधे चकमक पत्थर को निकाला और पास ही पड़ी एक मृतक सैनिक की तलवार से रगड़ दिया। चकमक से चिंगारियां फूटीं और चिता रूपी कुटिया जल उठी।

विधान और मयूर यज्ञ-वेदी के समीप खड़े गुरु काण की जलती चिता देखते रहे।

विधान ने डबडबाई आँखों से चारों ओर दृष्टि डाली- पक्षी अभी भी कलरव करते हुए आकाश में उड़ रहे थे, वृक्ष अभी भी पत्तियां खड़खड़ा रहे थे, खरहे अभी भी फुदक रहे थे। किसी के जीवन में कोई अंतर नहीं आया, संसार अपनी ही गति से बढ़ता है, वह कभी किसी के लिए नहीं ठहरता। सभी प्रसन्न हैं, मात्र वह ही दुःखी है, इन सभी को उसके दुःख में सम्मिलित होना चाहिए। क्या मात्र उसी के दुःखी होने का कारण यह है कि वह गुरु काण का एकमात्र संबंधी है... यदि ऐसा है, तो समस्त संसार को एक-दूसरे से संबंधित हो जाना चाहिए, ताकि सब एक दूसरे का दुःख बाँट सके। इन पक्षियों को, खरहों को, वृक्षों को एवं

समस्त मनुष्यों को एक-दूसरे से बंध जाना चाहिए....।

उसका हृदय दुःख से बैठा जा रहा था, उसने अपने दुःखी मन से पूछा, ''मैं अपना दुःख किससे बांटू?'' तभी अंतर्मन में कहीं ध्वनि फूटी- हे मूर्खानंद! दुःख भी कोई बांटने वाली वस्तु है, बाँटना है तो सुख बाँट ... अच्छा ही है जो समस्त संसार एक-दूसरे से संबंधित नहीं है, अन्यथा एक दुःखी तो संसार दुःखी...जो प्रसन्न हैं, उन्हें प्रसन्न ही रहने दे, अपने दुःख से उन्हें दुःखी मत कर .....
उसका विचार मंथन चल ही रहा था कि उसे लगा कोई उसके कंधे रगड़ रहा है। वास्तविक लोक में आकर उसने देखा कि मयूर अपने नथुने रगड़ रहा था। विधान ने महसूस किया, वह अपने दुःख में अकेला नहीं है। उसने मयूर की गरदन सहलायी, काठी उठाकर उसकी पीठ पर कसी और फिर तलवार, भाला तथा ढाल लेकर उस पर बैठ गया।

विधान ने अपने आंसू पोंछे और मयूर को ऐड़ लगा दी। कुछ दूर जाकर वह रुका और मुड़कर देखा, चिता की प्रचंड अग्नि अभी भी गुरु काण का सत्कार कर रही थी।

विधान ने संकल्प लिया - ''हे पितातुल्य! मैं आपकी शिक्षाओं का कभी अनादर नहीं करूँगा। आपने प्रतिशोध को सदैव विष कहा है, मैं वचन देता हूं कि मैं कभी प्रतिशोध नहीं लूँगा परन्तु उस नीच सुदास को दंड अवश्य दूंगा।''

उसने गहरी सांस ली और घर की ओर चल दिया। मार्ग में पड़ने वाले वन में, संध्या के इस पहर कोयल ने कूक लगाकर प्रतियोगिता में फिर से आमंत्रित किया, परन्तु उसने अनसुना कर दिया।

विधान के जाने के पश्चात् झुरमुटों के बीच से बैंगनी रंग की पगड़ी पहने, सैनिक वेश-भूषा में एक साया प्रकट हुआ। वह झुरमुटों में छिपा बहुत देर से विधान के क्रिया-कलाप देख रहा था। वह झुरमुटों से निकलकर चिता के पास पहुंचा और तब तक वहीं खड़ा रहा, जब तक कि पूरी चिता जल कर बुझ न गयी। उसने चिता की कुछ राख अपने वस्त्रों में बांधी और योद्धा सम्मान प्रदर्शित करने के लिए अपना अगूंठा चीरकर रक्त की दो बूंद चिता पर गिरा दी। उसने मरे हुए सैनिकों के पास जाकर कुछ छानबीन की, सतर्कता से चारों ओर देखा और फिर एक ओर चल दिया

***

रात्रि बहुत शांतिपूर्ण थी, परन्तु कुंडार के राजा चक्रधर का मन बहुत अशांत

था। वे अपने शयनकक्ष में खिड़की पर अकेले खड़े पूर्णिमा का चाँद देख रहे थे। आकाश स्वच्छ था। हर रात्रि की भांति, आज भी वे तारों के बीच कुछ खोज रहे थे। फिर कुछ देर पश्चात् मुड़कर कक्ष में पड़ी स्वर्णजड़ित शैय्या को देखा, फूलदान में रखे पुष्पों को देखा, दीवारों पर टंगी रमणीय कलाकृतियों को देखा और अंत में अपने शरीर पर लदे स्वर्णाभूषणों को देखा। सब कुछ उन्हें अर्थहीन प्रतीत हो रहे थे। उनका हृदय कह रहा था कि स्वर्णाभूषणों को निकाल कर फेंक दें, शय्या को उलट दें, कलाकृतियों को उतारकर भूमि पर पटक दें। हृदय पीड़ा के बोझ से फटा जा रहा था। एक बार फट ही जाता, तो इस यातना से मुक्ति मिल जाती। सितारों के बीच देखते हुए, उनके मन का कष्ट बढ़ गया.... हे जया!.....मेरी महारानी ... मुझे इस संसार में अकेला छोड़कर तुमने मेरे प्रति अपराध किया है .. हमारा पुत्र स्वयं ही इस कुल की मर्यादा को छिन्न-भिन्न करने में लगा है...यदि मैं अपनी प्रजा को उचित उत्तराधिकारी न दे सका, तो ... जीवन भर जो कुछ किया... सब व्यर्थ हो जायेगा.....जिस प्रजा को हमारे पुरखे राज्य की आत्मा कहते थे, वह उसी को पीड़ित करता है....हे जया, तुम लौट क्यों नहीं आती?....मैं अकेला थक गया हूँ ...

महाराज अपने दुःख में डूबे थे, तभी द्वारपाल ने आकर उग्रकेतु के आने की सूचना दी। राजा ने स्वयं को स्वस्थ किया और अंदर भेजने का आदेश दिया।

अगले ही क्षण बैंगनी रंग की पगड़ी पहने उग्रकेतु ने कक्ष में प्रवेश किया। उसने अपने राजा की आँखों में निराशा और विरक्ति के भाव देखे। वह थोड़ा विचलित हुआ, सोच ही रहा था कि अपनी बात कैसे प्रारंभ करे कि राजा खुद बोल पड़े - ''आज मध्याहन के बाद दक्षिणी वन में हमारे सैनिकों ने सुदास के एक अंगरक्षक को बंदी बनाया .... उसने बताया कि सुदास ने आदरणीय काण की हत्या के लिए अपने अंगरक्षक भेजे थे और वे अपने कार्य में सफल भी रहे।''

उग्रकेतु कुछ न बोला, बस सिर झुका कर खड़ा रहा। महाराज चक्रधर कुछ क्षण शांत रहे, फिर स्वयं को संयमित करते हुये पूछा - ''क्या तुम्हें पहुँचने में विलम्ब हो गया था? उग्रकेतु!''

''महाराज! मैं नियत समय पर ही पहुंचा था, परन्तु प्रतीत होता है कि युवराज सुदास को आदरणीय काण के बारे में पहले ही भनक लग चुकी थी। मैं आपको पूरी घटना विस्तार से बताता हूँ,'' उग्रकेतु ने कहा- ''मैं अपने नियत समय से उस ग्राम की ओर चला जिसके बारे में गुप्तचरों ने बताया था। उस ग्राम का नाम महु है, ग्राम के बाहर मैंने अपना घोड़ा छोड़ा और सतर्कता से पैदल चल पड़ा। मार्ग में मुझे युवराज सुदास का अंगरक्षक मिला जिसका एक हाथ कटा हुआ था, मरणासन्न अवस्था में उसने मुझे आश्रम की घटना बताई। मुझे भान हो

गया था कि अनर्थ हो गया है, फिर भी थोड़ी सी आशा लिए मैं आश्रम पहुंचा। चारों ओर मृत सैनिक पड़े हुए थे। तभी एक युवक कुटिया से बाहर निकलता दिखा। उस मरणासन्न सैनिक ने बताया था कि उसकी यह दुर्दशा एक अज्ञात युवक ने की है। अतः मैं छिपकर उसके क्रिया-कलाप देखने लगा। उसके कार्यों से प्रतीत हो रहा था कि वह आदरणीय काण से अच्छी तरह परिचित होगा। उसने आश्रम की कुटिया तोड़कर चिता बनाई और उनका अंतिम संस्कार किया, फिर वह उनके अश्व मयूर को लेकर चला गया....मैनें वहाँ की छानबीन की....सारे सैनिक युवराज सुदास के अंगरक्षक थे। वहां पड़े सारे शस्त्रों पर कुंडार की मुहर लगी हुई थी, इसके अतिरिक्त कुछ और प्राप्त नहीं हुआ। लौटते हुए ग्राम के बाहरी छोर का निरीक्षण किया, कहीं किसी भी तरह की सैनिक गतिविधि के चिह्न नहीं मिले। जैसा कि आपने स्वयं कहा कि पकड़े गए अंगरक्षक ने माना है कि युवराज सुदास की आज्ञा से ही उनकी हत्या हुई है और मार्ग में मिले मरणासन्न सैनिक ने भी इसकी पुष्टि की है। सारे प्रत्यक्ष प्रमाण युवराज सुदास को आदरणीय काण की हत्या के लिए दोषी प्रमाणित करते हैं। पिछली बार जब युवराज सुदास ने सत्ता हथियाने का षड्यंत्र किया था, तब ठोस प्रणाम न होने पर नियमों की आड़ लेकर वह बच निकले थे, परन्तु इस बार हमारे पास जीवित प्रमाण है।''

महाराज चक्रधर धैर्य से सुनते रहे, फिर अगले ही क्षण दुःख और निराशा से फट पड़े।

''प्रमाणों की क्या आवश्यकता है? उग्रकेतु!.....मेरे बाद यह सारा राज्य उसी का है, फिर भी उस महामूर्ख को न जाने कौन सी शीघ्रता पड़ी है। मैं स्वयं ही राज-पाट त्याग कर वानप्रस्थ चला जाता, परन्तु युवराज्याभिषेक के बाद, उसने जो व्यवहार प्रजा के साथ किया, उससे प्रतीत नहीं होता कि वह इस राज्य का उचित उत्तराधिकारी है। प्रजा को सुखी-संपन्न बनाने के लिए मेरे पूर्वजों और मैनें जो परिश्रम किया है, वह उसे एक दिन में ही धूल-धूसरित कर डालेगा।''

महाराज, उग्रकेतु के पास आये और दोनों हाथ उसके कंधे पर रखकर दयनीय भाव से पूछा - ''क्या मैनें एक पिता की भूमिका उचित ढंग से नहीं निभाई है?..... उसे भी तो वही शिक्षा मिली, जो उसके बड़े भाई को मिली थी.....क्या मैं उसे विरासत में कोई गुण नहीं दे सका? उग्रकेतु!.....''

''महाराज! विरासत में मात्र जीवन मिलता है, गुण और दोष मनुष्य की व्यक्तिगत उपलब्धियां हैं, ...वृक्ष अपने समस्त फलों को एक समान पोषण देता है, किन्तु इसके पश्चात् भी कुछ फल दूषित हो जाते हैं...उनके दूषण के लिए वृक्ष की भूमिका को दोष नहीं दिया जा सकता, अतः युवराज के कृत्यों के लिए स्वयं

को दोष न दें।'' उग्रकेतु ने सांत्वना देनी चाही।

कक्ष में लंबे क्षणों तक सन्नाटा छाया रहा। महाराज ने स्वयं को व्यवस्थित करने का प्रयत्न किया और वार्तालाप को मुख्य विषय की ओर मोड़ते हुए पूछा - ''बंदी सैनिक ने उस अज्ञात युवक के पास भूमि सिद्धि होने की बात कही है, क्या यह सत्य है?''

''भूमि सिद्धि के बारे में मरणासन्न सैनिक ने भी बताया था, परन्तु मैंने अपने नेत्रों से उसका प्रदर्शन नहीं देखा'' उग्रकेतु ने कहा।

महाराज कुछ क्षणों तक सोचते रहे, फिर बोले- ''अर्थला को भूमि-सिद्धि के बारे में संदेश भिजवा दो।''

''जैसी आज्ञा, महाराज।''

महाराज ने द्वारपाल को बुला कर सेनापति वक्रनाथ को बुलाने का आदेश दिया।

''महाराज! आदरणीय काण के योद्धा सम्मान के लिए उनकी भस्म लाया हूँ,'' उग्रकेतु बोला।

महाराज ने एक दृष्टि भस्म पर डाली और शांत रहे। कुछ देर पश्चात् सेनापति वक्रनाथ आया। महाराज ने सेनापति को आदेश दिया- ''सुदास को आदरणीय काण की हत्या के अपराध में कारागार में डाल दो तथा पूरे राज्य में तीन दिवस के राजकीय शोक की घोषणा करवा दो। कल प्रातः संगम तट पर आदरणीय काण को योद्धा सम्मान दिया जायेगा।''

सेनापति वक्रनाथ ने उग्रकेतु से भस्म ली तथा आज्ञा लेकर चला गया। उग्रकेतु से अपने राजा के मुख पर दयनीय भाव देखे नहीं जा रहे थे, अतः उसने निवेदन किया, ''मुझे भी आज्ञा दें महाराज।''

महाराज ने संकेत में हामी भरी और उग्रकेतु चला गया।

एक व्यक्ति का दुःख दूसरा व्यक्ति अवश्य अनुभव कर सकता है, परन्तु दुःख की सीमा एक व्यक्तिगत अनुभूति होती है, जो किसी से साझा नहीं होती।

महाराज ने अपने स्वर्णाभूषणों को खींच कर भूमि पर पटक दिया।

***

उग्रकेतु महाराज के कक्ष से निकलकर भूमिगत कारागार की ओर चला गया। वह कुंडार के गुप्तचर विभाग का प्रमुख था। उसने उसी दिन गुप्तचर विभाग के प्रमुख का पद संभाला था, जिस दिन चक्रधर राजा बने थे। समवयस्क तथा अच्छे व्यक्ति होने से महाराज और उग्रकेतु में अच्छी बनती थी। महाराज, उग्रकेतु

को गुप्तचर के अतिरिक्त अपना मित्र समझते थे तथा राजकीय समस्याओं पर उसके विचारों को महत्व भी देते थे।

उग्रकेतु अर्धरात्रि में कारागार पहुंचा और बंदी बनाए गए अंगरक्षक से मिला।

''तुमने अपने नेत्रों से उसे भूमि सिद्धि प्रयोग करते हुए देखा था?'' उग्रकेतु ने पूछा।

''जी हाँ, श्रीमान्! उसने जो अमानवीय बारह हाथ से भी अधिक ऊँची उछाल भरी थी, वह भूमि सिद्धि के बिना संभव नहीं था। उसके एक ही प्रहार में हमारा नायक मूर्च्छित हो गया। जो नायक अकेला ही पांच सैनिकों के बराबर हो, उसे एक ही प्रहार में मूर्च्छित करना सामान्य शक्ति के बस में नहीं है। पूर्व सेनापति काण के अतिरिक्त पूरे जम्बूद्वीप में कोई अन्य भूमिसिद्धि धारक नहीं था। इसी विलक्षण सूचना के लिए मैं जीवित भाग कर आया था।''

उग्रकेतु चुप रह कर कुछ सोचता रहा। कारागार की दीवारों को विचलित दृष्टि से देखते हुए सैनिक ने पूछा -''मेरा भविष्य क्या होगा? श्रीमान्!''

तुमने वही किया जो तुम्हारे स्वामी ने कहा, तुमने मात्र एक सैनिक का कर्तव्य निभाया है, तुम्हारा भविष्य वही होगा जो एक सैनिक का होता है'' कहकर उग्रकेतु भूमिगत कारागार से बाहर आ गया।

कारागार से निकलकर वह गुप्तचर विभाग की ओर चल दिया। अभी उसने आधा मार्ग ही तय किया था कि एक संदेशवाहक गरुड़ को नीची उड़ान भरते देखा। उसने अनुमान लगाया कि यह गरुड़ कुछ क्षण पहले ही छोड़ा गया है। उसने अपनी कमर के पीछे से एक छोटा छुरा निकाला और उड़ते हुए गरुड़ को मारने के लिए लक्ष्य बना ही रहा था कि उसके चौकन्ने कानों ने हवा में सरसराहट सुनी। उसने छुरा छोड़कर फुर्ती से अपनी तलवार निकाली और उसके फलक पर दायीं ओर से आते एक छुरे को रोका। यदि उग्रकेतु ने क्षण भर भी देरी की होती, तो वह छुरा उसका कंठ चीर गया होता। उग्रकेतु ने दूसरे हाथ से अपना छुरा उठाया और चौकन्ना होकर आक्रमणकारी को खोजने लगा। तभी झुरमुटों के बीच एक साया भागता हुआ दिखा। उग्रकेतु ने पूरी शक्ति से छुरा फेंक मारा, परन्तु साया अधिक फुर्तीला निकला। फेंका हुआ छुरा झुरमुटों में विलीन हो गया। फिर वह साया दुबारा नहीं दिखा। उग्रकेतु ने आकाश की ओर देखा, गरुड़ पूर्व की ओर उसकी पहुँच से दूर उड़ चुका था। संभवतः वह आक्रमणकारी भी यही चाहता था। उग्रकेतु ने सतर्कता से आसपास छानबीन की। झुरमुटों में अपने फेंके हुए छुरे के अतिरिक्त कुछ भी न मिला। उसने आक्रमणकारी के छुरे को ध्यान से देखा, उस पर कुंडार की मुहर लगी हुई थी। उग्रकेतु ने ठंडी सांस छोड़ी।

वह गुप्तचर विभाग पहुंचा। संदेश लिखा, गरुड़ के पीठ पर बंधी लकड़ी और चमड़े से बनी छोटी सी नली में डाला, मांस का एक छोटा टुकड़ा गरुड़ को खिलाया और अर्थला के लिए उड़ा दिया। संदेश लिखते समय उसे अनुभव हो रहा था कि पूरा जम्बूद्वीप एक नयी करवट लेने वाला है।

प्रस्थान निवेदन

आश्रम वाली घटना को तीन दिन हो चुके थे। संध्या होने वाली थी। घर पर विधान अकेला शांति के पास नीम के वृक्ष के नीचे खाट डालकर बैठा था। उसके शरीर के घाव अभी भी दर्द कर रहे थे। आश्रम वाली घटना, उसने माँ और सत्तू के अतिरिक्त किसी और को नहीं बताई। वैसे भी उसके जीवन में माँ और सत्तू के अतिरिक्त था ही कौन। जब से उसने शस्त्र-शिक्षा प्रारम्भ की, पूरा दिन आश्रम में ही बीत जाता था, धीरे- धीरे ग्राम के अन्य युवकों से संपर्क टूटता चला गया। आस-पास की घटनाओं की सूचनायें सत्तू ही लाकर देता था। जब माँ ने आश्रम वाली घटना सुनी तो भयभीत हो उठी थी, उन्होंने उसी क्षण उससे वचन ले लिया कि वह घर से बाहर न निकले। परन्तु यह कैसे संभव है कि वह जीवन भर घर में ही बैठा रहे। वैसे भी स्वयं उसका मन ही नहीं कहता कि वह कहीं जाए। गुरु काण को स्मरण कर उसका हृदय पीड़ित हो रहा था। उसके सम्मुख बार-बार सुदास का रेखाचित्र उभरता। उसका शरीर प्रतिशोध की ज्वाला से जल उठा। वह घटनाओं को जोड़ने का प्रयास कर रहा था कि सुदास की गुरु काण से क्या शुत्रता हो सकती थी, परन्तु कोई उत्तर न मिला। उसने अपनी बलिष्ठ भुजाओं और ठोस जंघाओं को देखा, सब कुछ अर्थहीन प्रतीत हो रहे थे। वह सामर्थ्य ही क्या, जो किसी की रक्षा न कर सके।

तभी दूर धूल उड़ती दिखी। उसे थोड़ी शंका हुई, ग्राम बहुत बड़ा था परन्तु घरों की संख्या कम होने से सभी घर एक-दूसरे से बहुत दूर-दूर बसे थे, एक घर में कुछ हो जाए तो दूसरे को भनक तक न लगे। वह उठ कर आँगन के दरवाजे पर खड़ा हुआ। आँखों पर बहुत बल देकर, दृष्टि केन्द्रित करने से, धूल की आंधी में धुंधली-धुंधली आकृतियां दिखने लगीं। कुछ ही क्षणों बाद स्पष्ट हो गया कि वे आकृतियां घुड़सवारों की हैं। तभी उसे लगा कि कोई उड़ती हुई वस्तु उसकी ओर आ रही है। उसका मस्तिष्क चौकन्ना हो उठा, वह झट से दाईं ओर हटा। सनसनाता हुआ एक बाण उसके बगल से होकर, बांस से बने आँगन के दरवाजे में धंस गया। निश्चित हो गया वे जो भी हैं, शत्रु हैं।

गुरु काण की सौगंध, यदि ये सुदास के सैनिक हुए तो एक भी जीवित नहीं लौटेगा, वह मन ही मन फुंफकार उठा। परन्तु यदि वह वहीं रुका रहा, तो पूरा घर ही संघर्षस्थल बन जायेगा और बहुत संभव है कि गर्भवती शांति को भी हानि पहुँच जाए। उसने ऊपर वाले को धन्यवाद ज्ञापित किया कि घर में माँ नहीं है। तभी

दूसरा बाण आकर उसके पैरों के समीप भूमि में गड़ गया। उसे एक ही मार्ग सूझा, यदि वह उन घुड़सवारों को वन में खींच ले जाए, तो वृक्षों की सघनता के कारण उनकी गति कम हो जाएगी और बाणों से भी बचा जा सकेगा। उसने घर के दायीं ओर से वन की तरफ दौड़ लगा दी। घोड़े पर बैठे धनुर्धारी पास आते जा रहे थे, वे लगातार बाण चला रहे थे। वह पूरी रफ्तार से भागा जा रहा था। कोई बाण उसके कान को छूकर निकल रहा था तो कोई कमर को, बहुत बचने के बाद भी एक बाण उसकी दायीं जांघ में जा घुसा। परन्तु उसने अपनी गति कम न की।

सामने आठ हाथ चौड़ी नहर थी, उसे पार करते ही वन की सीमा प्रारम्भ हो जाती। नहर के पास आकर उसने अमानवीय उछाल भरी और एक ही छलांग में नहर पार कर गया। उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा कि शुत्र कितने समीप आ चुके हैं। वह अतिशीघ्र वन पहुंचना चाहता था। वह वन की सीमा पर पहुँचने ही वाला था कि सामने से कुछ अन्य घुड़सवार सैनिक प्रकट हुए। उसे लगा, वह घेर लिया गया है। अब सामना करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न था।

उसने देखा एक कवच-रक्षित दृढ़ शरीर वाला महाबलिष्ठ योद्धा घोड़े पर सबसे आगे खड़ा है। विधान के पास एक ही अवसर था, यदि वह क्षण भर के लिए भी रुका, तो पीछे से आने वाले बाण उसे बींध डालेंगे। उसने अपनी गति बढ़ाई और विस्मय कर देने वाली उछाल भरी। हवा में ही उसने सफेद घोड़े पर बैठे महाबलिष्ठ के मुख को लक्ष्य बनाकर घूंसा ताना और समीप पहुँचते ही चला दिया। प्रंचड घूंसा पड़ने ही वाला था कि उस विकराल योद्धा ने अचानक हाथ बढ़ाकर उसका कंठ थाम लिया। विधान का सारा शरीर हवा में झूल गया। उसे इसकी तनिक भी आशंका न थी। हाथ की पकड़ बहुत मजबूत थी, उसे अपनी सांसें रूकती हुई प्रतीत हुई। अगले ही क्षण विशाल शरीर वाले महायोद्धा ने उसे भूमि पर पटक दिया।

भूमि पर पड़े विधान का मस्तिष्क घूमने लगा। जांघ में लगे बाण की पीड़ा बढ़ती जा रही थी। बंद होती आँखों से उसने देखा - धनुर्धारी घुड़सवार नहर पार करते ही रुक गए तथा बाण चलाना भी बंद कर दिया। उन धनुर्धारियों के बीच एक जो सैनिक वेशभूषा में नहीं था, उसने आगे बढ़कर तेज स्वर में कुछ बुरा-भला कहा और फिर धनुर्धारियों को लौटने का आदेश दिया। महाबलिष्ठ के पीछे खड़ा सैनिक धनुर्धारियों का पीछा करना चाहा, परन्तु उसने इशारे से अनुमति नहीं दी। अगले ही क्षण भयंकर पीड़ा से विधान की आँखें बंद हो गयीं।

कुछ क्षणों पश्चात् उसकी चेतना वापस आयी। बंद आँखों के बीच से उसने एक झिर्री पैदा की और देखा कि, वह वहीं पड़ा हुआ था जहाँ उसे पटका गया था। चारों ओर से कवचधारी सैनिकों ने गोल घेरा बनाकर उसे घेर रखा था। कोई

कुछ बोल नहीं रहा था, मानों सब उसके उठने की प्रतीक्षा कर रहे हों। उसने धीरे से आँखें खोली और हाथ के बल उठ कर बैठ गया। सभी सैनिक चौकन्ने हो उठे। उसकी जांघ का बाण निकाल दिया गया था तथा घाव भरने के लिए कोई औषधि लगी हुई थी। उसने गरदन घुमाकर घेरे के बाहर देखा। महाबलिष्ठ के साथ एक विचित्र बौना खड़ा था। मानों ऊपर से नीचे सफेद रीछ(भालू) की खाल पहन रखा हो तथा मुख पर वानर के समान मुखौटा लगा रखा हो। उसकी कमरपेटी एवं तलवार की मूठ स्वर्णजड़ित थी।

विधान ने उठने का प्रयत्न किया, तभी एक सैनिक, जिसकी वेशभूषा अन्य सैनिकों से थोड़ी अलग थी, आगे बढ़कर उसे उठने में सहायता करने लगा। उस सैनिक का सहारा लेकर विधान खड़ा हुआ और शंकित दृष्टि से सबको देखने लगा। उसकी शंका को समझकर, उस सैनिक ने अपना परिचय दिया।

''श्रीमान् विधान! आप शंकित न हों, हम आपके मित्र हैं। मेरा नाम रूपक है... मैं अर्थला की पंचम वाहिनी सेना का सेनानायक हूँ .... यह अर्थला के सेनाध्यक्ष तथा संरक्षक सिंहनाद हैं (महाबलिष्ठ की ओर संकेत कर) .....और यह (उस विचित्र बौने की ओर संकेत कर) हिमालय के यति सम्राट के पुत्र एवं श्वेतखंड राज्य के राजकुमार स्थूल हैं....हम अर्थला राज्य के शासनादेश से आपसे निवेदन करने आये हैं कि आप हमारे साथ अर्थला प्रस्थान करें।''

'सिंहनाद', यह नाम विधान के मस्तिष्क में कौंधा, यह तो गुरु काण के बालसखा हैं। वह कभी-कभी इनके बारे में चर्चा किया करते थे। विधान ने सिंहनाद को ध्यान से देखा। ऊँचा कद, गोल कंधे, शरीर इतना बलिष्ठ मानों जन्म लेते ही व्यायाम प्रारंभ कर दिया हो, मोटी, घनी मूछें जो कनपटियों पर जाकर बालों से मिल गयीं और थोड़ा लटककर गालों को भी ढक लिया, मजबूत चौड़ा जबड़ा, बड़ी-बड़ी आँखे और मुख के भाव इतने शांत जैसे ध्यान-मग्न हों।

सैनिक कह रहा है, वे उससे निवेदन करने आये हैं कि वह उनके साथ अर्थला चले, परन्तु क्यों? इनके भाव और व्यवहार तो मित्रवत् हैं, परन्तु बातें विचित्र लग रहीं हैं। तभी उसे घर का ध्यान आया, कहीं लौटते समय क्रोधवश धनुर्धारियों ने मयूर और शांति को हानि तो नहीं पहुँचाया। हो सकता है उन्होंने घर को भी आग लगा दिया हो। उसने दृष्टि तिरछी कर घर की दिशा में देखा। इतनी दूर से घर तो नहीं दिखा, परन्तु आसमान की ओर उठता धुआं अवश्य दिखा, उसकी आशंका सही थी।

उसने उठते धुंए की ओर संकेत कर रूपक से कहा, ''यदि आप हमारे मित्र हैं, तो कृपया मेरे घर चलें, मुझे आशंका है कि मेरे परिजन संकट में हैं।''

रूपक ने सिंहनाद की ओर देखा, उन्होंने तुरंत चलने का संकेत किया। सारे

सैनिक अपने-अपने घोड़ों पर बैठ गए। रूपक ने विधान को अपना घोड़ा देना चाहा, परन्तु उसने मना कर दिया।

घोड़े पूरी गति से दौड़े जा रहे थे। विधान कुछ दूर दौड़ता और फिर उछल जाता। उछलते-उछलते वह सैन्य टुकड़ी से बहुत आगे निकल गया तथा कुछ क्षणों पश्चात् घर पहुँच गया। वहां का दृश्य ज्वलनशील था। उन धनुर्धारियों ने सारी कुटियों में अग्नि लगा दी थी। शांति के उदर में एक बाण लगा हुआ था, वह निढाल होकर भूमि पर पड़ी थी, उसके हिल रहे सिर से ज्ञात हुआ कि वह अभी जीवित है। मयूर अग्नि से विचलित होकर अपने बंधन छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा था। एक कुटिया पूरी तरह जलकर भस्म होने ही वाली थी। उसने आँगन में रखे घड़ों के जल से आग बुझाने का प्रयत्न किया, परन्तु उतना जल पर्याप्त नहीं था। तभी सैन्य टुकड़ी भी आ पहुंची।

बौना यति राजकुमार स्थूल घोड़े से उतरकर भागता हुआ आया। अपनी स्वर्णजड़ित कमरपेटी में बनी छोटी-छोटी थैलियों से कुछ चूर्ण निकालकर आँगन के मध्य रख दिया और घड़े से जल लेकर उस पर गिरा दिया। चूर्ण से गाढ़ा पीला धुआं निकला और कुछ ही क्षणों में पूरी अग्नि को ढक लिया। अगले कुछ क्षणों उपरांत जब धुआं छटा, तब सारी अग्नि बुझ चुकी थी। विधान के लिए यह आश्चर्यजनक था। उसे शांति की चिंता हुई। उसने स्थूल का कंधा थपथपाकर शांति की ओर संकेत किया तथा स्वयं जाकर मयूर के बंधन खोल दिये। बंधन खुलते ही मयूर आँगन से निकलकर भागता हुआ दूर चला गया।

विधान ने देखा, स्थूल ने शांति के उदर से बाण निकाला, बाण निकलते ही रक्त की धार फूट पड़ी। स्थूल ने कुछ चूर्ण घाव पर डाले, चूर्ण से हल्का धुआं निकला और शांति भयंकर जलन से रंभा उठी, पर अगले कुछ क्षणों में रक्त बहना बंद हो गया। उस सफेद बौने ने इधर-उधर देखा, मानों कुछ ढूंढ़ रहा हो। फिर आँगन के मध्य में लगी तुलसी पर उसकी दृष्टि रुक गयी। उसने तुलसी की कुछ पत्तियों को तोड़ा, उन्हें मसला, कुछ अन्य चूर्ण एवं जल मिलाया और फिर घाव पर लेप लगा दिया। शांति के नेत्रों के भाव से लग रहा था कि उसे कुछ राहत मिल रही है।

घर में चार कुटियाँ थी, एक कुटिया भस्म हो चुकी थी, दो कुटियों की छत पूरी तरह जल चुकी थी, केवल रसोई वाली कुटिया बची थी- जिसकी आधी छत ही नष्ट हो पायी थी। सिंहनाद ने कुछ संकेत किया। सभी सैनिक गति में आ गए। सैनिकों ने आँगन में फैली राख साफ की। कुछ सैनिक बाहर लगी बांसवाड़ी से बांस काटने लगे। विधान की जांघ की पीड़ा बढ़ गई और अत्यधिक कमजोरी का अनुभव हुआ, अतः वह शांति के समीप बैठकर उनके क्रियाकलाप देखने लगा।

सैनिकों के घोड़ों पर ढेरों सामान लदा था। उन्होंने तरह-तरह के औजार और रस्सियाँ निकाली तथा बाँसवाड़ी से काटे गए बासों की सहायता से कुटिया की अस्थाई मरम्मत करने लगे। आसमान में उड़ते विचित्र से पीले धुंए को देखकर कुछ ग्रामवासी कौतूहलवश खिंचे चले आये, परन्तु सैनिकों को देखकर वे भयभीत हो उठे और भाग गए। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जिन कुटियों को बनाने में उसे पूरा दिन लग जाता था उसे उन सैनिकों ने कुछ ही समय में रहने योग्य बना दिया। हालांकि वह पहले जितनी मजबूत नहीं थीं, फिर भी अस्थायी मरम्मत हो चुकी थी।

विधान के मन में ढेरों प्रश्न उपज रहे थे। सुदास की गुरु काण से शत्रुता और आश्रम में उनकी हत्या.....धनुर्धारियों द्वारा उस पर हमला....अर्थला से उसे निमंत्रण....जिन यतियों के विषय में मात्र कहानियाँ सुनी थीं उसका राजकुमार स्वयं उसके सामने उपस्थित था। वह अतिशीघ्र समस्त प्रश्नों के उत्तर चाहता था। उसे रह-रह कर कमजोरी का अनुभव हो रहा था।

कुटिया की मरम्मत करने के पश्चात् सारे सैनिक अनुशासित होकर कतारबद्ध हो गए। सिंहनाद ने रूपक को संकेत किया। रूपक ने सैनिकों को कार्य बाँट दिए। चार सैनिक घर के चारों ओर चौकसी के लिए तैनात हो गए। एक धनुर्धारी नीम के पेड़ पर चढ़ कर तैनात हो गया। सिंहनाद, रूपक, स्थूल, विधान और बाकी के पंद्रह सैनिक आँगन के मध्य गोल घेरा बनाकर बैठ गए। सब शांत थे और विधान को घूर रहे थे। उनके घूरने से विधान थोड़ा विचलित हो गया। बौना स्थूल बोला- ''तुम पर विष बुझे बाणों का प्रयोग हुआ था, अतः जो औषधि मैनें घाव पर लगाई है उससे कुछ समय के लिए शक्तिहीनता का अनुभव होगा।''

विधान को उस बौने यति की आवाज बहुत मित्रवत् और मधुर लगी। उसने उसे ध्यान से देखा। उस यति का वानर मुखौटा किसी लचीले पदार्थ का बना प्रतीत हो रहा था, जब वह बोलता था, उसके हिलते होंठ स्पष्ट दिखते थे। उसकी घनी भौंहें जाकर बालों से मिल गई थीं। उसके लंबे-लंबे भूरे बाल थे तथा मस्तक पर एक स्वर्णपट्टी बंधी थी जिसके मध्य में एक छोटा लाल रत्न जड़ा हुआ था। उस स्वर्णपट्टी ने उसके लंबे बालों को बांध रखा था। उसकी भूरी दाढ़ी कनपटियों पर जाकर बालों से मिल गयी थी।

विधान ने अपना गला साफ किया और विनम्र होते हुए कहा, ''आप लोगों के विषय में मैं बहुत भ्रमित हूँ, कृपया आप लोग अपना प्रयोजन विस्तार से बतायें।''

रूपक ने कहना आरम्भ किया - ''श्रीमान् विधान! अपना तथा यहाँ उपस्थित सभी जनों का परिचय मैं पहले ही दे चुका हूँ। समस्त बातें बताना और

समझाना मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं है। आपकी शंका का समाधान करने हेतु जितना मैं बता सकता हूँ, बताता हूँ।''

रूपक ने बताया- ''कुंडार के पूर्व दिशा में मुंद्रा राज्य है। बीस वर्ष पूर्व मुंद्रा सम्राट जयभद्र ने पृथ्वीपति बनने का अभियान छेड़ दिया। अपनी विशाल सेना के साथ उसने पूरा जम्बूद्वीप रौंद डाला। अनेक राज्यों को जीतकर वह सम्राट तो बन गया, परन्तु पृथ्वीपति का सम्मान ग्रहण करने के लिए उसे समस्त जम्बूद्वीप को जीतकर एक पताका के नीचे लाना होगा। उसके इस अभियान में अर्थला सबसे बड़ी बाधा थी। अतः पंद्रह वर्ष पहले अर्थला और मुंद्रा के बीच भीषण संग्राम हुआ। उस महासंग्राम में संगम से लेकर काशी तक गंगा का जल रक्त से लाल हो गया था अतः उस महासंग्राम को रक्तगंगा-संग्राम की संज्ञा दी जाती है। उस संग्राम में अर्थला तो बच गई, परन्तु अर्थलाधीश'धाता पंचम' वीरगति को प्राप्त हो गए। मरणासन्न अवस्था में उन्होंने अर्थला में 'जननी सर्वोच्च' का विधान लागू करने का आदेश दिया। जननी सर्वोच्च के अनुसार अर्थला का राजसिंहासन रानी वसुंधरा ने संभाला। कुछ समय तक सब कुछ व्यवस्थित रहा, परन्तु पितृसत्तात्मक समाज में शासन के कुछ लोगों को एक स्त्री द्वारा शासित होना अच्छा नहीं लगा।

रक्तगंगा संग्राम में हुई आर्थिक तथा सैन्य क्षति और उसके बाद अंदरूनी षड्यंत्रों से अर्थला शक्तिहीन होती चली गई। पांच वर्ष पहले स्थिति अत्यंत जर्जर हो गई थी। यदि अमरखंड का सहयोग न मिला होता, तो सम्राट जयभद्र उसी समय अर्थला को रौंद डालता .....''

रूपक रुक गया और विधान से पूछा, ''अमरखंड के विषय में तो आपको ज्ञात ही होगा।''

''मात्र इतना जानता हूँ कि वह बहुत विशाल विद्याश्रम है, जहाँ जम्बूद्वीप के सारे राजकुमार शिक्षा प्राप्त करते हैं।'' विधान ने सपाट भाव से उत्तर दिया।

रूपक बोला, ''तीन सौ वर्ष पूर्व अर्थला में धाता वंश की नींव पड़ने के कुछ समय बाद अमरखंड की स्थापना हुई थी। प्रारंभ में अमरखंड की स्थापना एक शिक्षाकेन्द्र के रूप में की गई थी, परन्तु उसकी महत्ता को देखते हुए वह धीरे-धीरे जम्बूद्वीप का केन्द्र बिंदु बन गया। किसी राजनीतिक झगड़े का निपटारा हो या आपातकालीन स्थिति, अमरखंड एक अभिभावक की भांति, जम्बूद्वीप की सदैव रक्षा करता रहा है। इस समय सम्पूर्ण जम्बूद्वीप गहरे संकट में है। पहला संकट सम्राट जयभद्र है। यदि वह अर्थला जीत कर पृथ्वीपति बन जाता है, तो अपनी कुंठा उतारने के लिए अमरखंड को नष्ट कर देगा। एक अभिभावक के न होने से घर की व्यवस्था जिस प्रकार टूटती है, उसी प्रकार अमरखंड के नष्ट होते ही जम्बूद्वीप भी छिन्न-भिन्न हो जायेगा और पहले से घात लगाए बैठी असुर तथा

दानव जातियां जम्बूद्वीप पर अधिकार कर लेंगी। उनके अधिकार करते ही इस देश की हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति और सभ्यता नष्ट हो जायेगी।

दूसरा संकट भेड़ाक्ष नाम की दैत्य जाति है। तीन सौ वर्ष पूर्व देवों तथा इन दैत्यों के बीच आखिरी देवासुर-संग्राम हुआ था। उस महासंग्राम में हार के परिणामस्वरूप भेड़ाक्षों को पातालगंगा भेज दिया गया और देवों को अपनी देवनगरी अर्थला छोड़नी पड़ी, जिस कारण से अर्थला में धाता वंश की स्थापना हुई।

पिछले कुछ वर्षों से भ्रांतियाँ फैल रहीं हैं कि भेड़ाक्ष अपनी शक्ति बटोरकर जम्बूद्वीप लौटने वाले हैं। यदि भेड़ाक्ष युद्ध के प्रयोजन से लौटे, तब जम्बूद्वीप में न जीवन बचेगा, न संस्कृति। इन दोनों संकटों का सामना अर्थला को ही करना है ....।''

''परन्तु इन सब में.....मेरी क्या भूमिका है?'' विधान ने बीच में टोकते हुए पूछा।

रूपक ने विधान की आँखों में झांकते हुए कहा- ''श्रीमान् विधान! आपकी भूमि सिद्धि।''

''भूमि.....सिद्धि? अर्थात्?'' विधान ने आँखों में प्रश्नवाचक भाव लेकर पूछा।

रूपक ने विधान को इस भाव से देखा, मानों इतनी लंबी कथा किसी गलत व्यक्ति को पकड़ कर सुना दी हो। स्वयं को सयंमित करते हुए उसने कहा ''हम सभी ने अपने नेत्रों से आपको भूमि सिद्धि का प्रयोग करते हुए देखा।''

''कब देखा?''

''आपने एक ही छलांग में आठ हाथ चौड़ी नहर पार कर ली तथा सेनाध्यक्ष सिंहनाद पर प्रहार करने के लिए भी अमानवीय उछाल ली थी'' रूपक ने समझाते हुए कहा।

''ओह! वानर छलांग'' विधान ने मानों समझते हुए कहा।

''वा .....वानर छलांग?'' रूपक और स्थूल के मुख से एक साथ निकला, दोनों आश्चर्य से एक दूसरे का मुख देखते रहे।

रूपक - ''श्रीमान् विधान! इतनी महान् सिद्धि का इस प्रकार उपहास न उड़ाएं।''

विधान - ''मैं सत्य कहता हूँ, मैनें कोई उपहास नहीं उड़ाया। यह कला मैनें अपने गुरु से सीखी है, उन्होंने मुझे किसी अन्य के समक्ष प्रदर्शित करने से मना किया था।..... प्राण संकट में थे अतः करना पड़ा।''

कुछ क्षणों तक सब शांत रहे। रूपक ने सिंहनाद की ओर देखा, उन्होंने

किसी प्रकार का संकेत किया।

विधान को यह बहुत विचित्र लगा। उसने सिंहनाद के मुख से अभी तक एक शब्द भी नहीं सुना था। उसने अनुमान लगाया कि संभवतः वह गूंगे हैं।

''यह कला आपको आदरणीय काण ने सिखायी है, क्या यह पूर्ण सत्य है?'' रूपक ने इस ढंग से पूछा, मानों किसी महान् रहस्य का उत्तर चाहता हो।

''हाँ!'' विधान ने सपाट उत्तर दिया।

''उन्होंने अपने विषय में क्या बताया था?''

कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद विधान बोला- ''वह पांच वर्ष पहले इस ग्राम में आये थे, तभी से मैं उनसे शस्त्र शिक्षा प्राप्त कर रहा था। जब भी उनसे उनका इतिहास जानने का प्रयास किया, उन्होंने टाल दिया। बहुत कहने पर गुरु-दक्षिणा के समय अपनी कथा बताने के लिए तैयार हुए, परन्तु गुरु-दक्षिणा वाले दिन पापी सुदास ने सैनिक भेजकर उनकी हत्या करवा दी...'' बात पूरी करते-करते विधान की भृकुटी तन गई। ''मुझे उनके बारे में मात्र इतना ही ज्ञात है, संभवतः आपको मुझसे अधिक ज्ञात है अतः कृपया उनके बारे में विस्तार से बतायें।''

''तीन दिन पूर्व कुंडार ने आपके विषय में अर्थला को संदेश भिजवाया था। संदेश मिलते ही हम तुरंत चल पड़े। कुंडार ने, गुप्तचरों द्वारा आपके विषय में एकत्र की गई सूचनाएं हमें दी। मार्ग में हमारी मुठभेड़ मुंद्रा के सैनिकों से हो गई। उनकी सैन्य टोली का नायक वासुकी था। वह बहुत धूर्त और कपटी है। हमें अंदेशा हो गया था कि वह संभवतः आपको हानि पहुँचाने के उद्देश्य से ही जा रहा है। अपनी धूर्त नीति में फंसाकर उसने हमें मार्ग से भटका दिया था और हमसे पहले आप तक पहुँच गया। उन्हीं सैनिकों ने आप पर तीरों से वार किया था। भाग्य से हम उचित समय पर पहुँच गये ..... शेष सूचनायें तथा आदरणीय काण का इतिहास, अर्थला पहुँचने पर आपको ज्ञात हो जाएगा।'' रूपक ने अत्यंत संक्षिप्त में बताया।

विधान ने समझाने की मुद्रा में थोड़ा आगे झुकते हुए कहा, ''श्रीमान् रूपक! आपने जितनी भी कथा मुझे सुनायी, उनमें से अधिकांश, मेरे सिर के ऊपर से निकल गयीं। आप लोग अचानक प्रकट हो गये और मुझे अर्थला चलने के लिए कह रहे हैं। आपके परिचय के अतिरिक्त आप लोगों के विषय में मुझे कुछ भी नहीं ज्ञात है। आपका व्यवहार बहुत मित्रवत् है, परन्तु मेरे मन में ढेरों शंकाएं हैं।''

कुछ क्षणों तक सब शांत रहे, फिर ध्वनि आयी ''भयभीत न हो, पुत्र!''

विधान ने पहली बार सिंहनाद की आवाज सुनी। उनकी आवाज गर्जनादार

थी और उनका पुत्र कहना उसे बहुत अच्छा लगा।

''क्या काण ने तुम्हें इतिहास का ज्ञान नहीं दिया''? सिंहनाद ने पूछा।

''नहीं! उन्होंने शस्त्र और नैतिक शिक्षा पर ही अधिक जोर दिया था''

''पुत्र! हम अर्थला से निवेदन लाए हैं, आदेश नहीं, निर्णय करने के लिए तुम स्वतंत्र हो''

विधान कुछ क्षण चुप रहा, फिर पूछा- ''मुंद्रा के सैनिकों ने मुझ पर आक्रमण क्यों किया? उनकी मुझसे क्या शत्रुता?''

''आपसे कोई शत्रुता नहीं, श्रीमान्! आप हमारे लिए हितकारी हैं, इस कारण से'' रूपक ने उत्तर दिया।

''अर्थात्?''

''जम्बूद्वीप में जैसी स्थिति बन रही है, उससे शीघ्र ही युद्ध होने की संभावना है। अर्थला अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। उसी प्रयास के तहत अर्थला चाहती है कि आप अपनी भूमि सिद्धि का ज्ञान देकर नए भूमि सिद्धि धारक योद्धा बनाने में सहयोग करें। हम हर संभव स्थान से संसाधन जुटा रहे हैं और सम्राट जयभद्र हर संभव प्रकार से हमारे संसाधनों को नष्ट करने में लगा है। हमारे अतिरिक्त उसे भी ज्ञात हो गया है कि आप अर्थला के लिए बहुमूल्य हैं, अतः आपको नष्ट करने का प्रयत्न किया।''

पिछली कथाओं की भांति यह कथा भी विधान के ऊपर से निकल गई, परन्तु उसने मुख के भाव ऐसे बनाए मानों वह स्थिति की गंभीरता को अच्छी तरह समझ रहा हो। बोला,

''परन्तु अर्थला का संकट आपका है, मेरा नहीं, मैं अर्थला का निवासी तक नहीं।''

''श्रीमान् विधान! यह संकट तो पूरे जम्बूद्वीप का है। जिस दिन अर्थला नष्ट हो गई, उसी दिन कुंडार भी नष्ट हो जायेगा। जिस दिन कुंडार नष्ट हो गया, यह कैसे संभव है कुंडार में ही स्थित यह ग्राम सुरक्षित रहेगा। दूर दिखती अग्नि कब स्वयं के घर पहुँच जाए, इसका भान भी नहीं होता।'' रूपक ने समझाया।

विधान कुछ न बोला, वह भ्रमित था, उसे कर्तव्य बोध कराया जा रहा है अथवा अर्थला चलने के लिए प्रेरित।

उसके मनोभाव को समझने का प्रयत्न करते हुए रूपक बोला - ''मेरे अधिकार में मात्र इतनी ही बातें बताना संभव है। अर्थला में समस्त बातें विस्तार से ज्ञात हो जायेंगी। हम कुंडार के महाराज चक्रधर से मिलते हुए अर्थला जाएंगे, यदि आपकी उत्सुकता आदरणीय काण के बारें में बहुत अधिक है तो कुंडार में ही उनके बारे में बहुत कुछ ज्ञात हो जायेगा।''

यह लोग कुंडार जा रहे हैं, वहां के महाराज से मिलेंगे, अर्थात् उस नीच सुदास को दंड देने उसके समीप तक पहुँच सकता हूँ, बस इसी अवसर की तो प्रतीक्षा थी मुझे, विधान का हृदय आनंद और क्रोध की मिश्रित अनुभूति से भर गया। उस पापी को दंड देना ही तो मेरे जीवन का लक्ष्य है, अर्थला और जम्बूद्वीप का तो पता नहीं परन्तु उस नीच को दंड देने अवश्य जाऊंगा।

विधान अपनी भावनाओं में मग्न था, तभी नीम के पेड़ पर बैठे धनुर्धारी ने धरती पर सिंदूरी रंग का बाण मारा, जो प्रथम स्तर के संभावित संकट का सूचक था। धनुर्धारी ने सामान्य से थोड़ी ऊँची आवाज में कहा - एक स्त्री, एक युवक, एक कुत्ता। सारे सैनिक क्षण भर में शस्त्र लेकर आँगन में फैल गए।

''कोई संकट नहीं, संभवतः मेरी माँ और भाई होगें'' विधान ने कहा और खड़े होकर देखा, कुछ क्षणों में आकृतियां स्पष्ट हो गयीं और निश्चित हो गया, माँ और सत्तू हैं।

माँ सत्तू के साथ हाट से वस्तुएं लेने पड़ोस के गाँव गई थी। वह संध्या ढलने से पहले वापस लौटना चाहती थी, परन्तु सत्तू के सूचनाएं एकत्रित करने के स्वभाव के कारण विलंब हो गया। घर का हाल देखकर दोनों हक्के-बक्के हो गए। सैनिकों को देखकर माँ भयभीत हो उठी। सत्तू भी भयभीत हो रहा था, परन्तु भय का भाव मुख पर प्रदर्शित न होने पाए इसका पूरा प्रयास कर रहा था। उसका काला कुत्ता भागता हुआ निढाल पड़ी शांति के पास पहुंचा और पूंछ हिला-हिला कर उसे सूंघने लगा। माँ के भयभीत मुख को देखकर विधान आगे बढ़कर माँ के पास पहुंचा और सैनिकों के मित्रवत् होने की बात कही। फिर भी माँ का भय कम न हुआ।

विधान ने उन्हें बची हुई रसोई वाली कुटिया में बिठाया और सारा घटनाक्रम सुनाया। घटनाक्रम सुनकर माँ का भय और बढ़ गया, परन्तु सत्तू के नेत्रों में कौतूहल नाच रहा था।

'भूमि सिद्धि', 'अर्थला', 'सम्राट', 'सेना', 'पृथ्वीपति', 'जम्बूद्वीप पर संकट', 'अमरखंड' - सूचनाएं एकत्रित करना सत्तू का प्रिय कार्य था, अतः यह सब सुनकर वह रोमांचित हो रहा था।

पूरा घटनाक्रम सुनाने के बाद तीनों चुप रहे, माँ विधान को एकटक घूरती रहीं फिर अचानक अपने हृदय से चिपकाकर फूट-फूट कर रो पड़ी। वह माँ के हृदय से चिपटा रहा। लंबे क्षणों तक रोने के बाद माँ स्वयं शांत हो गयी। वह कुछ न बोलीं और स्वयं को व्यवस्थित करते हुए उठीं और भोजन बनाने के लिए कोठरी में रखे घड़ों से अनाज निकालने लगी। विधान ने देखा माँ के मुख के भाव एकदम परिवर्तित हो गए हैं। कुछ क्षणों पहले जिस मुख पर भय की काली छाया

थी, वह मुख अब भावहीन हो चुका था। उसे माँ का यह व्यवहार बहुत विचित्र लगा। वह उठकर माँ के पास पहुंचा और धीमी आवाज में कहा - ''माँ! मैं तुझे छोड़कर अर्थला नहीं जा रहा, बस कुंडार तक जाऊँगा, उस पापी से प्रतिशोध लूँगा और वापस लौट आऊंगा।'' माँ कुछ न बोलीं, बस उसकी आँखों में झांकती रही फिर दोनों हाथों से उसका मुख पकड़कर मस्तक चूम लिया और पुनः अपने कार्य में लग गयीं। विधान वहीं खड़ा कुछ सोचता रहा, फिर सत्तू को लेकर कुटिया से बाहर आ गया। बाहर सभी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

''मैं आपका निवेदन स्वीकार करता हूँ,'' विधान ने कहा।

''अति उत्तम श्रीमान्! हमारे संकट और अपने कर्तव्य को समझने के लिए धन्यवाद ... अब तो रात्रि हो चुकी है, अतः कल प्रातःकाल सविता नारायण के उदय होते ही यात्रा प्रारंभ करेंगे।'' रूपक ने विनम्र होकर धन्यवाद ज्ञापित किया।

सैनिकों ने घोड़ों पर लदे ढेरों सामनों से आंगन में ही रात्रि विश्राम की सारी व्यवस्था कर दी। जब तक सैनिकों ने अपनी व्यवस्था पूर्ण की, माँ भी भोजन बना चुकी थी। सत्तू ने सभी को भोजन परोसा। भोजन कर सभी सैनिक अपने नियत स्थानों पर विश्राम करने चले गए। सिंहनाद, रूपक और स्थूल के सोने की व्यवस्था उनसे हटकर थी। आँगन के चारों ओर अभी भी चार सैनिक पहरा दे रहे थे और एक धनुर्धारी नीम के पेड़ पर तैनात था। अग्नि से भयभीत होकर भागा मयूर आँगन के बाहर घास चर रहा था। विधान ने उसे लाकर शांति के पास बांध दिया। सत्तू का कुत्ता शांति के पास बैठा हुआ था। स्थूल ने शांति के घाव पर लगी औषधि साफ कर नई औषधि लगा दी, फिर उसने विधान के शरीर पर भी लगे घावों पर औषधि बदल दी। औषधि लगते ही इतनी तीव्र जलन हुई कि चीख रोकने के लिये विधान को अपनी सम्पूर्ण इच्छाशक्ति लगानी पड़ गई, कुछ क्षणों में धीरे-धीरे जलन कम हुई।

सत्तू ने जब से स्थूल को देखा, वह उससे बात करने के लिए उत्साहित था। विधान की तरह उसने भी यतियों के बारे में मात्र सुन रखा था। वह स्थूल के पास गया और अपना परिचय दिया। स्थूल ने भी अपना परिचय दिया। वार्तालाप प्रारंभ होने की देर थी, सत्तू ने अपने कौतूहल भरे अद्‌भुत प्रश्न मारने प्रारंभ कर दिए - इस रीछ जैसी खाल में गर्मी नहीं लगती, यदि पसीना हो गया तो सूखता कैसे होगा, यदि हर समय मुखौटा पहने रहते हैं तो मुख कैसे धोते हैं, कम से कम मल त्याग करते समय तो यह खाल उतारते ही होंगे, हिमालय पर इतनी ठंड होती है तो नहाते कैसे हैं, हिमालय पर कौन-कौन सी घास उगती है, ...सुना है यतियों के पास हिम सिंह होते हैं....। स्थूल थोड़ा विचलित हो गया। स्थूल को संकट में फंसा देखकर रूपक दोनों के पास आया और सत्तू को अपना परिचय दिया तथा

बात सँभालते हुये बोला - ''लंबी यात्रा के कारण स्थूल थक गया है, उसे विश्राम की आवश्यकता है, आपके समस्त प्रश्नों का उत्तर कल प्राप्त हो जायेगा, तब तक आप अपने बारे में कुछ बताएं।'' सत्तू फिर शुरु हो गया। उसने बताना प्रारंभ कर दिया - जिस दिन उसने जन्म लिया था, कैसे बादल गरजे थे और तूफान आया था, कैसे-कैसे उसने लट्टू चलाना सीखा, आज तक लट्टू फाड़ने की प्रतियोगिता में कोई उसे हरा नहीं पाया है, कैसे उसने खरगोश के बच्चे को कुतों से बचाया था। एक-एक कर उसने अपनी सारी जीवनगाथा बता डाली। अंत में अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों को स्मरण करते हुए उस दिन की चर्चा की जब उसे रागा मिला था।

''रागा? यह कौन है?'' रूपक ने पूछा।

सत्तू ने कुत्ते की ओर देखकर पुचकारा, कुत्ता भागता हुआ आया, भूमि सूंघी और पूंछ हिलाता हुआ बैठ गया।

''यह है रागा,'' सत्तू ने कुत्ते की गरदन सहलाते हुए कहा, ''छः वर्ष पूर्व मुझे यह बकरी के बच्चे के साथ एक गड्ढे में मरणासन्न अवस्था में मिला था। मैं दोनों को उठा कर घर ले आया, बकरी का बच्चा तो नहीं बचा परन्तु यह महावीर मृत्यु की काली छाया को चीरकर लौट आया और कुछ ही दिनों में स्वस्थ होकर फुदकने लगा। जब यह भौंकता था तो लगता मानों कोई सुर छेड़ रहा हो, अतः मैंने इसका नाम रागा रख दिया .....चल रागा अपना प्रिय गीत सुना'' सत्तू ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा।

रागा ने अपनी गरदन ऊँची की और थोड़ा गुर्राया, मानों गाने से पहले अपना गला साफ कर रहा हो और फिर - भों .भों .भों .भों।

रूपक विचित्र दृष्टि से सत्तू को एकटक देखता रहा। फिर बोला, ''अद्भुत श्रीमान् सत्तू! अद्भुत! आपकी कला की परख प्रशंसनीय है। रात्रि चढ़ चुकी है और कल हमें लंबी यात्रा पर जाना है, अतः अब मैं भी रात्रि विश्राम के लिए जाता हूँ।''

रूपक के जाने के बाद सत्तू विधान के पास पहुंचा। विधान काले आसमान को एकटक घूरता कहीं खोया हुआ था।

''भईया! कल मैं भी साथ चलूँगा'' सत्तू ने कहा।

विधान कुछ क्षण शांत रहा फिर बोला, ''ठीक है।'' और करवट लेकर दूसरी ओर मुख कर लिया।

अगले दिन प्रातः सूर्य के उदय होने से पूर्व ही सब उठ गये। सैनिकों ने अपने कवच धारण किये तथा घोड़ों पर सामान लादा। विधान ने मयूर की पीठ पर

काठी कसी तथा गुरु काण की तलवार और ढाल लाद दी। सैनिक सामान ढोने के लिए दो अतिरिक्त घोड़े लाये थे। उनमें से एक घोड़ा सत्तू के लिए तैयार कर दिया गया। अब तक पूरब में सविता नारायण भी पूरी तरह उग चुके थे। माँ ने सभी को गुड़ मिली दही खाने को दिया। विधान और सत्तू ने माँ के चरण स्पर्श किये और अपने घोड़ों पर बैठ गए। कल से अभी तक माँ ने एक शब्द भी न बोला था। माँ का जड़वत् मुख विधान को दुःखी और विचलित कर रहा था।

सिंहनाद ने संकेत दिया, सभी ने अपने घोड़े कुंडार की ओर दौड़ा दिये। उनके साथ रागा भी अपना प्रिय गीत गाते हुए यात्रा पर निकल पड़ा।

कुंडार

घोड़े लगातार दौड़े जा रहे थे। घोड़ों को जल पिलाने के लिये मात्र दो बार रोका गया था। यदि इसी गति से चलते रहे, तो दोपहर तक कुंडार पहुँच जायेंगे। सत्तू को घोड़े पर बैठने का बहुत कम अभ्यास था, अतः उसकी जंघाओं और पीठ में दर्द होने लगा। बेचारा रागा जीभ निकाल कर जैसे-तैसे घोड़ों के बराबर चलने का प्रयास करता, परन्तु कभी-कभी वह पीछे छूट ही जाता, फिर सत्तू रूपक से घोड़ों की गति कम करने के लिये विनती करता। सूर्य अब तपने लगा था, परन्तु अधिकतर मार्ग वनों में तय करने से गर्मी ने अधिक विचलित नहीं किया।

पूरे मार्ग विधान की देह उत्तेजना और क्रोध से जलती रही, वह आस-पास के वातावरण से पूरी तरह कटा हुआ था। वह मार्ग भर सोचता रहा - 'सुदास को कौन सा दंड दूँ .... मृत्युदंड दूंगा तो गुरु काण को प्रतिशोध न लेने का दिया हुआ वचन टूट जायेगा... उसके दोनों हाथ काट देता हूँ, जीवन भर विकलांग रहेगा, तो भोजन के लिये भी दूसरों पर निर्भर रहेगा ..... परन्तु उसके पास तो दास - दासियों की कोई कमी नहीं है ..... उसके हाथ-पाँव दोनों काट देता हूँ, सुविधा संपन्न होते हुये भी सुखों के लिये तरसेगा .... नहीं-नहीं इससे मेरे हृदय को शांति नहीं मिलेगी .....उसके परिजनों को उसके नेत्रों के सामने मृत्यु दूंगा .....नहीं-नहीं उसके कर्मों में उसके परिजनों का क्या दोष ... तो .. उसको अँधा बना देता हूँ, जिन सुखों को बढ़ाने के लिये उसने दूसरों का जीवन नष्ट किया है, उन सुखों को वह अपने नेत्रों से ही नहीं देख पायेगा ..... नहीं-नहीं इससे भी संतुष्टि नहीं मिलेगी .....'

इसी तरह सुदास को दंड देने के लिये विधान न जाने कितने उपाय सोचता रहा, परन्तु एक बार भी वह संतुष्ट नहीं हुआ। उसे प्रतिशोध न लेने का अपना वचन स्मरण आता, परन्तु उसका मस्तिष्क हर बार उसे तर्क देता कि वह प्रतिशोध कहाँ ले रहा, वह तो मात्र दंड दे रहा है। उसके अंतर्मन ने अपनी रुष्टता प्रकट की - वाह रे तर्कज्ञानी! तर्क का आवरण ओढ़ लेने से भावना नहीं बदल जाती, तू कभी संतुष्ट नहीं होगा क्योंकि प्रतिशोध कभी संतुष्ट नहीं होता।

सुदास का विचार करते-करते उसकी श्वासों की गहराई और मस्तिष्क का ताप बढ़ गया, उसका गला शीघ्र ही सूखने लगा। सत्तू उसकी अवस्था को समझ रहा था, अतः उसने विधान से बात करने की चेष्टा नहीं की।

कुछ ही देर में वे कुंडार की राजधानी के नगर द्वार के सामने खड़े थे।

सामान्य वृक्ष की ऊंचाई से दुगुना ऊंचा वह द्वार पत्थरों से बना था, उसमें कोई दरवाजा नहीं लगा था, मात्र चौखट थी। मानों उन्हें किसी के आक्रमण का भय न हो और वह द्वार मात्र राजधानी की सीमा का प्रतीक चिन्ह हो। द्वार के बाईं तथा दाईं ओर जहाँ तक दृष्टि जाती, वहां तक थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पत्थरों से बनी सैन्य छावनियां थीं। उनमें से अधिकतर को वनस्पतियों ने ढक रखा था। द्वार से एक निश्चित दूरी पर पहुँच कर पूरा सैन्य दल रुक गया। रूपक ने सबसे पीछे सामान लादे घुड़सवार को संकेत दिया। उस सैनिक ने घोड़े से उतरकर एक ध्वज निकाला, उसे अपने भाले पर चढ़ा कर फहराते हुये सबसे आगे खड़ा हो गया। कुछ क्षणों पश्चात् द्वार के पीछे से कुछ घुड़सवार निकले और उन्हें अपने साथ लेकर राजधानी में प्रवेश कर गये।

उन्हें गुप्तचर विभाग के पीछे बने विश्राम भवन में ठहराया गया था। भवन में दो कक्ष थे, जो आपस में जुड़े हुये थे। एक कक्ष में सिंहनाद, रूपक, स्थूल तथा दूसरे में विधान और सत्तू ठहरे थे। सत्तू निराश था क्योंकि उसे आशा थी कि उसका भव्य स्वागत होगा, फूल बरसाये जायेंगे,जन-समूह उन्हें देखने के लिये लालायित रहेगा, स्नान के लिये सुगन्धित जल की व्यवस्था होगी, भिन्न-भिन्न प्रकार के मिष्ठान मिलेंगे, परन्तु यहाँ अभी तक मात्र मीठा शर्बत ही दिया गया था।

***

कुंडार की राजसभा में अभूतपूर्व शांति थी। आज बैठने की व्यवस्था भी भिन्न थी। साधारण दिनों में महाराज चक्रधर ही न्याय सुनाया करते थे, परन्तु आज अपराधी राजवंश से जुड़ा हुआ था। यह महाभियोग का विषय था। तीन न्यायाधीश महाराज के बायीं ओर तथा तीन दायीं ओर बैठे थे। राजा के न्याय में कम से कम तीन न्यायाधीशों का सहमत होना आवश्यक था। छहों न्यायाधीश दिखने में एक जैसे ही प्रतीत होते थे; सफेद लंबे बाल, सफेद दाढ़ी एवं समान वय, बस कद में ही भिन्नता थी।

सभा के बीच युवराज सुदास बंदी की भांति खड़ा था। आज राजसभा में सारे मंत्री उपस्थित थे। महाराज के ठीक सामने खड़े विधि मंत्री ने आरम्भ किया, ''कुंडार के महाराज चक्रधर सान, छहों न्यायाधीशों तथा राजसभा में उपस्थित सभी मंत्रीगणों के समक्ष अपने इष्ट सूर्य को साक्षी मानकर मैं कुंडार सत्ता का विधि मंत्री सारांश आपको वचन देता हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत समस्त प्रमाण सत्य एवं प्रभाव रहित होंगे।''

सारांश धीरे से पीछे हटा और सुदास के पास जाकर खड़ा हो गया। उसने

प्रारम्भ किया, '' युवराज सुदास, महाराज चक्रधर के द्वितीय पुत्र एवं सान वंश के एकमात्र जीवित उत्तराधिकारी हैं। युवराज सुदास पर आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने जम्बूद्वीप के सबसे सम्मानित व्यक्ति तथा कुंडार के भूतपूर्व सेनाध्यक्ष एवं संरक्षक आदरणीय सहस्त्रबाहु काण की अपने अंगरक्षक सैनिकों द्वारा हत्या करवाई है। युवराज पर यह आरोप भी लगाया जाता है कि उन्होंने बाहरी व्यक्ति के प्रभाव में आकर कुंडार सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का षड्यंत्र रचा है। युवराज ने अपने कृत्यों को पूरा करने के लिये राजकोष का दुरूपयोग किया तथा सीमा सुरक्षा व्यवस्था में भी कुंडार सत्ता के संज्ञान के बिना अपने लाभ के लिये परिवर्तन किया। युवराज के कृत्यों से कुंडार के सम्मान और सुरक्षा को भारी क्षति पहुंची है .....मैं उपलब्ध प्रमाणों को प्रस्तुत करने की अनुमति चाहता हूँ,'' सारांश ने निवेदन किया।

महाराज ने संकेत से अनुमति दी। उसके बाद सारांश एक के बाद एक प्रमाण प्रस्तुत करता रहा और राजसभा में महाभियोग चलता रहा। पूरे महाभियोग के दौरान सुदास के मुख के भाव एक समान रहे। शर्म, पश्चाताप, दुःख अथवा क्रोध के भाव क्षण भर के लिये भी उसके मुख पर नहीं आये। उस पर जितने भी आरोप लगाए जाते, उसे स्वीकारने में वह क्षण भर भी नहीं लगाता, जैसे वह चाहता हो कि यह सब अति शीघ्र समाप्त हो। प्रमाणों के साथ सारांश ने जिन रहस्यों को खोला,उन्हें जानकर पूरी राजसभा सन्न रह गयी। कुछ को सुदास पर क्रोध आया और कुछ को उससे सहानुभूति। पूरे महाभियोग में बहुत कम तर्क-वितर्क हो सका क्योंकि सुदास ने कोई प्रतिवाद नहीं किया, अतः निर्णय शीघ्र ले लिया गया।

महाराज ने न्यायाधीशों से मन्त्रणा करके सारांश को अपना निर्णय बताया। सारांश ने राजसभा के मध्य खड़े होकर सभी को निर्णय सुनाया -''मैं कुंडार का विधि मंत्री अपने इष्ट सूर्य को साक्षी मानकर वचन देता हूँ कि मेरे द्वारा सुनाया जाने वाला निर्णय स्वयं महाराज का है।''

वह बोला, ''इस राज्य के युवराज तथा कुंडार सत्ता के भावी उत्तराधिकारी ने अपने राज्य, वंश, और कर्तव्यों को उचित सम्मान न देते हुए जनता को पीड़ित किया है। युवराज के कृत्यों से कई नागरिकों के प्राणों की हानि हुई है। अतः कुंडार सत्ता के विरुद्ध विद्रोह, शत्रु राज्यों से संबंध, आदरणीय सहस्त्रबाहु काण की हत्या, राजकोष का अनुचित प्रयोग एवं नागरिकों को पीड़ित करने के अपराध में कुंडार राजा चक्रधर सान के एकमात्र जीवित पुत्र सुदास से युवराज पद छीना जाता है तथा अघोषित समय के लिये कारावास का दंड दिया जाता है ..... क्या युवराज सुदास को यह दंड स्वीकार है अथवा वे क्षमा याचना का अंतिम अवसर

चाहते हैं?''

''दंड स्वीकार है।'' सुदास ने पूर्व की भांति बिना क्षण नष्ट किये सपाट भाव से स्वीकार कर लिया।

राजसभा में उपस्थित सभी मंत्रीगणों को पहले से भान था कि एकमात्र जीवित उत्तराधिकारी होने का लाभ सुदास को मिलेगा, अतः उसे मृत्युदंड नहीं दिया जायेगा।

दंड सुनाकर राजसभा स्थगित कर दी गयी, खचाखच भरी सभा धीरे-धीरे खाली होने लगी। उग्रकेतु भी अपने स्थान से उठा और राजसभा के बाहर निकल गया। बाहर निकलते ही एक सैनिक ने सिंहनाद के कुंडार पहुँचने की सूचना दी।

***

उग्रकेतु ने विश्राम कक्ष में प्रवेश किया। सारे मेहमान एक ही कक्ष में बैठे थे। सिंहनाद को प्रणाम कर उग्रकेतु भी बैठ गया। कुछ क्षणों तक विधान को अच्छी प्रकार देखने के पश्चात् नम्रता से बोला, ''आशा करता हूँ कि आप लोगों की कुंडार यात्रा सुखद रही होगी।''

रूपक ने विधान, सत्तू और उग्रकेतु का आपस में औपचारिक परिचय कराया तथा मुंद्रा के सैनिकों से हुई मुठभेड़ से लेकर कुंडार पहुँचने तक का वृत्तान्त संक्षेप में सुना दिया। उग्रकेतु उठा और महाराज से उनके मिलने की व्यवस्था करने की बात कहकर चला गया।

उसके जाने के पश्चात् विधान और सत्तू कक्ष के बाहर निकले और आस-पास घूमने लगे। उनका विश्राम भवन गुप्तचर भवन के ठीक पीछे था। वनस्पतियों और लताओं ने पूरे गुप्तचर भवन को घेर रखा था, दूर से देखने पर पता ही न चले कि यहाँ वनस्पतियाँ हैं अथवा भवन। वहां वृक्षों की संख्या और सघनता भी अधिक थी, संभवतः वह भी भवन को छिपाने में सहायक होते होंगे, ऐसा विधान ने अनुमान लगाया। विधान और सत्तू गुप्तचर विभाग को अंदर से देखना चाहते थे, परन्तु द्वार रक्षक ने अनुमति नहीं दी। अतः वे दोनों गुप्तचर भवन के बाहर चारों ओर घूम-घूम कर देखने लगे। रागा भी जगह-जगह सूँघ कर अपनी खोजी प्रतिभा का प्रदर्शन करने लगा।

पूरे गुप्तचर भवन में एक ही द्वार था, खिड़कियाँ भी मात्र तीन ही थीं, कहीं-कहीं रोशनदान दिखे, जिनमें से हवा और कीट-पतंगे ही प्रवेश कर सकते थे। विधान ने लताओं को हटाकर भवन की दीवार देखने का प्रयत्न किया, परन्तु इतने वर्षों में लताओं ने इतनी परतें चढ़ा दी थीं कि प्रयास करने पर भी दीवार नहीं

दिखी। चारों ओर घूम-फिर कर तथा ताजी हवा खाकर दोनों कक्ष में लौट आये।

दूसरे कक्ष में सिंहनाद, स्थूल और रूपक वार्तालाप कर रहे थे। विधान आकर लेट गया, परन्तु सत्तू दबे पाँव दरवाजे के पास कान लगाकर उनके वार्तालाप सुनने का प्रयास करने लगा। काफी देर सुनने के बाद भी उसे कुछ समझ में नहीं आया। वह विधान के पास लौट आया और अपनी धोती में बंधे लट्टू को निकालकर तरह-तरह के करतब दिखाने लगा। वह लट्टू को भूमि पर नचा कर उसके बगल लेट जाता, फिर नाचते लट्टू को हथेली से उठा कर अपनी तोंद पर रख लेता। विधान उसके करतबों को देखकर मुस्कुराता रहा।

कुछ देर पश्चात् उनके कक्ष में भोजन प्रस्तुत हुआ। भोजन लाने वाली सेविकाओं के शरीर पर लदे स्वर्णाभूषणों को देखकर कुंडार की सम्पन्नता का परिचय मिलता था। विधान की माँ के पास स्वर्णाभूषणों के नाम पर मात्र कान के कुंडल थे, और वे भी पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित होते हुये उसकी माँ तक पहुंचे थे। जबकि यहाँ सेविकाओं ने इतने धारण कर रखे थे कि मानों वे आभूषण न होकर उनके वस्त्र हों।

भोजन में फल, सलाद और मांसाहार की अधिकता थी। सिंहनाद और स्थूल ने ही मांसाहार किया। थोड़े बहुत मिष्ठान थे, जो सत्तू को पसंद नहीं आये। भोजन समाप्त हुये कुछ ही समय हुआ था कि उग्रकेतु आ गया, फिर सभी अपने घोड़ों पर बैठकर महाराज से मिलने चल दिये।

महाराज अपने व्यक्तिगत कक्ष में थे, उन्हें कुंडार के भविष्य की चिंता सता रही थी। उनके वंश के शासन से प्रजा इतनी प्रसन्न थी कि पिछली तीन पीढ़ियों से कोई विद्रोह नहीं हुआ, और आज उनके ही वंश ने कुंडार के लिए संकट खड़ा कर दिया है। उन्होंने आँखें बंद कर अपनी रानी जया का स्मरण किया। उस सुविधा संपन्न, समृद्ध राज्य के राजा को मात्र अपनी रानी की स्मृतियाँ ही सुख प्रदान कर पाती थीं।

स्मृतियों में खोये राजा का ध्यान आगंतुकों के आने की सूचना ने भंग किया। महाराज ने स्वयं को संयत किया और अन्दर भेजने को कहा। सिंहनाद, रूपक, स्थूल, विधान और सत्तू के साथ उग्रकेतु ने प्रवेश किया। विधान को छोड़कर सभी ने झुक कर प्रणाम किया। विधान ने देखा राजा उसी की ओर देख रहे हैं। स्वर्णाभूषणों से लदे इकहरे, लंबे शरीर वाले राजा के अधपके बाल चमक रहे थे, उनका चेहरा लंबा और मोटी घनी मूंछें थीं, जो अंत में थोड़ी नुकीली हो गई थीं। प्रथम दृष्टि में ही राजा बहुत सभ्य और दयालु जान पड़ते थे। विधान के प्रणाम न करने से रूपक थोड़ा सकपका गया, उसने कनखियों से संकेत करने का प्रयास किया, परन्तु विधान तो राजा से दृष्टि मिलाए हुए था।

महाराज ने विधान को ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखा। वय लगभग पच्चीस-छब्बीस वर्ष, सांवला रंग, दृढ़ कसरती शरीर, कमर के नीचे सफेद धोती, सख्त चमड़ी की परतों वाले नंगे पाँव, शरीर पर जगह-जगह घाव के चिन्ह, जिसमें से अधिकतर अभी पूरी तरह सूखे न थे। अपनी युवावस्था में काण भी इसी प्रकार दीखता था, परन्तु इसके हाथ और पैरों के कुंडल कहाँ हैं।

महाराज ने विधान के मुख के भाव स्पष्ट पढ़ लिये थे। उन्होंने शांत स्वर में पूंछा ''सिद्धिधारक! हमारा और तुम्हारा यह पहला परिचय है, फिर तुम किस कारण से रुष्ट हो?''

''आपके पुत्र ने मेरे पिता और गुरु की हत्या करवाई है'' विधान ने कठोरता से उत्तर दिया।

''तुम्हारी हानि के लिये हम दुःखी हैं।''

''आपके दुःखी होने से दोनों पुनर्जीवित तो नहीं हो जायेंगे।''

वहाँ उपस्थित किसी को भी विधान से इस प्रकार के व्यवहार की आशा न थी। रूपक को भय था कि कहीं महाराज क्रोधित न हो जाएँ, परन्तु महाराज शांत थे, वे कुछ न बोले। बोलते भी क्या, उन्होंने मन ही मन मान लिया था कि वे अपने वंश के सबसे असफल शासक सिद्ध हुये हैं। लंबे क्षणों तक मौन रहकर विधान को एकटक देखने के पश्चात् महाराज ने सभी को आसन ग्रहण करने को कहा। कुछ देर तक सभी से औपचारिक बात हुई, फिर सिंहनाद को छोड़कर सभी कक्ष के बाहर आ गये।

''काण ने अपना वचन निभाया '' महाराज ने कहा।

''हाँ महाराज! उन्होंने अपना उत्तराधिकारी चुन लिया।''

''औपचारिकताएं छोड़ो सिंह! यहाँ हमारे अतिरिक्त और कोई नहीं है,'' महाराज ने कहा, ''इस नये सिद्धिधारक के कुंडल कहाँ हैं?''

''संभवतः यह अभी प्राथमिक स्तर पर है।''

''क्या यह काण जितना सामर्थ्यवान् होगा?''

''यह तो भविष्य ही बताएगा।''

महाराज कुछ देर चुप रहे, फिर बोले, ''सिंह! कुंडार संकट में जा रहा है।''

''कैसा संकट?''

''कुंडार को दानव -नीति में फंसाया गया है।'' महाराज चक्रधर दीन स्वर में बोले।

''दानव नीति!'' सिंहनाद आश्चर्य चकित हो उठे।

कक्ष में महाराज और सिंहनाद के बीच मन्त्रणा चलती रही, तब तक बाकी लोग गुप्तचर विभाग के पीछे बने विश्राम कक्ष में लौट आये। रूपक के आग्रह

करने पर उग्रकेतु, विधान और सत्तू को लेकर राजधानी घुमाने और आदरणीय काण का इतिहास बताने चल दिए। उग्रकेतु ने उन्हें राजधानी के हाट-बाजार, महल, उद्यान आदि घुमाना और बताना प्रारम्भ किया।

उसने बताया, ''सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में कुंडार और अर्थला ही ऐसे राज्य हैं, जिसकी राजधानी तथा राज्य का नाम एक समान है। पांच पीढ़ी पहले 'बुध सान' ने कुंडार बसाया था। सान वंश ने कभी भी साम्राज्य विस्तार की नीति नहीं अपनाई। अतः जितनी भूमि पर बुध सान ने कुंडार बसाया था, मात्र उतनी ही भूमि आज भी कुंडार के पास है। कुंडार ने अपने उपलब्ध संसाधनों का बुद्धिमत्ता से प्रयोग कर स्वयं को जम्बूद्वीप का सबसे समृद्ध और संपन्न राज्य बना लिया। यहाँ अन्य राज्यों की तुलना में अधिक कर वसूला जाता है। अधिक कर वसूली के कारण दूसरे राज्यों की प्रजा यहाँ बसना नहीं चाहती, इससे कुंडार को जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों की कमी का सामना नहीं करना पड़ता। अन्य राज्यों को आपातकालीन अवस्था में, जैसे सूखा और महामारी में, कुंडार सहायता करने से कभी पीछे नहीं हटा। सहायता नीति के कारण अधिकतर राज्य कुंडार के मित्र हैं। अतः कुंडार को अन्य राज्यों से आक्रमण का संकट बहुत कम है।''

चलते-चलते उग्रकेतु उन्हें एक विशिष्ट जगह ले गया। वह एक बहुत बड़ी खुली जगह थी, जिसके मध्य में एक विशालकाय शिलाखंड रखा था जिस पर 'सहस्त्रबाहु काण' खुदा हुआ था तथा चारों ओर ढेरों पत्थर बिखरे पड़े थे, जिन्हें शिल्पकार तराश रहे थे। उग्रकेतु ने बताया कि आदरणीय काण को विशिष्ट योद्धा का सम्मान दिया गया है, अतः यहाँ उनके कद से दस गुना बड़ी मूर्ति लगाई जा रही है।

''उनके नाम के आगे सहस्त्रबाहु क्यों लिखा है?'' विधान ने विशाल शिलाखंड की ओर संकेत कर पूंछा।

उग्रकेतु ने आकाश की ओर देखा, मेघों ने सूर्य को ढक लिया था, वर्षा की पूरी संभावना थी। थोड़ी दूर पर एक वृक्ष के नीचे पत्थरों पर सभी बैठ गये और उग्रकेतु ने बताया-

''आदरणीय काण अब तक के सबसे महान् और श्रेष्ठ भूमि सिद्धिधारक माने जाते हैं। उनसे पहले भूमि सिद्धि मात्र देवों के पास थी, वे देवों के अतिरिक्त पहले व्यक्ति थे, जिसने भूमि सिद्धि प्राप्त की और उसे उस स्तर तक ले गये, जहाँ तक कोई देव कभी नहीं पहुंचा था।''

तभी मेघों ने गर्जना की और रिमझिम वर्षा प्रारम्भ हो गई। वृक्ष के नीचे होने के कारण वर्षा उन तक नहीं पहुँच पाई। उग्रकेतु आगे बोले, ''आदरणीय काण और सिंहनाद दोनों का जन्म किष्किन्धा राज्य में हुआ था। किष्किन्धा महान् मल्ल

योद्धाओं की धरती कही जाती है। काण यूथपति के पुत्र थे और सिंहनाद एक लोहार के। दोनों का परिचय, सर्वप्रथम उनकी प्रारम्भिक शिक्षा के समय आचार्य कृत के आश्रम में हुआ था। शिक्षा के समय ही सिंहनाद ने मल्ल युद्ध में इतनी महारत प्राप्त कर ली थी कि वे आज तक अपराजित योद्धा माने जाते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद मुख्य शिक्षा के लिये दोनों अमरखंड चले गये। यहाँ उनका परिचय राजकुमार चक्रधर से हुआ और तीनों परम मित्र बन गये। फिर अमरखंड में शिक्षा के समय दो वर्षों के लिये काण अदृश्य हो गए।''

''अदृश्य हो गए?'' सत्तू के मुख से निकला।

''हाँ! एक रात्रि वे अचानक कहीं चले गये और बहुत छान-बीन करने पर भी उनका पता नहीं चला। लोगों ने उन्हें मृत समझ लिया। परन्तु दो वर्षों बाद वे सिंहनाद को वन में अर्धमूर्छित अवस्था में भटकते हुये मिले। लौटने के बाद उन्होंने विचित्र बातें बतायीं। उन्होंने बताया कि वे एक साधु के पास भूमि सिद्धि सीखने गए थे। जिस रात्रि वे अदृश्य हुये थे, वह उसी के पास गये थे। वह साधु उन्हें वन में अचानक से मिला, उसने उनके गले में एक माला पहनाई, उस माला से एक सुगंध निकली, जिससे वे मूर्छित हो गये और जब चेतना वापस आयी, तब वह साधु के आश्रम में थे। वहीं उन्होंने भूमि सिद्धि सीखी और दो वर्ष बाद पुनः वही माला पहनाई गई तथा मूर्छित होने के बाद वन में उनकी चेतना वापस आयी। किसी को उन पर विश्वास नहीं हुआ और एक लड़के की रोमांचक कल्पना मान ली, क्योंकि सभी जानते थे कि भूमि सिद्धि मात्र देव ही प्राप्त कर सकते हैं। विश्वास प्राप्त करने के लिये उन्होंने लोगों को उछल कर दिखाया, वह उछाल सामान्य से थोड़ी ऊंची थी, परन्तु इतनी भी नहीं कि उसे भूमि सिद्धि समझा जाता। लोगों के लिए उनका लौट आना ही महत्वपूर्ण था, अतः उनकी मानसिक अवस्था को ठीक न मानते हुए उनकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। वे तरह-तरह की मुद्राएँ बनाकर निरंतर अभ्यास करते रहे और अगले वर्ष वार्षिक खेल प्रतियोगिता में एक ही छलांग में वृक्ष पारकर सबको दिखा दिया कि वे सिद्धिधारक हैं। पूरा जम्बूद्वीप सन्न रह गया। पिछले तीन सौ वर्षों से कोई सिद्धिधारक नहीं देखा गया था। लोगों ने मात्र ग्रन्थों में ही वर्णन सुना था। जो भूमि-सिद्धि देवों की विरासत मानी जाती थी, वह प्रथम बार किसी सामान्य व्यक्ति ने प्राप्त की थी। कुछ लोग उन्हें देव भी कहने लगे। वे निरंतर अभ्यास करते रहे और अपनी सिद्धि के स्तर को बढ़ाते रहे। एक दिन वे देव स्तर तक पहुँच गए। देव स्तर उस अधिकतम स्तर को कहते हैं, जहाँ तक कोई देव पहुंचा हो। ग्रन्थों के वर्णन के अनुसार पांचवे स्तर को देव-स्तर कहते हैं, जिसे मध्यदेव ने रचा था। कुछ समय पश्चात् काण देव-स्तर को पारकर सातवें स्तर तक पहुँच गए।

अमरखंड में शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् सिंहनाद अर्थला चले गए और काण अपने प्रिय मित्र चक्रधर के साथ कुंडार आ गये। जिस दिन युवराज चक्रधर का राज्याभिषेक हुआ, उसी दिन काण कुंडार के सेनापति नियुक्त हुये और कुछ समय बाद सेनाध्यक्ष भी बन गए। भूमि सिद्धिधारक काण की उपस्थिति मात्र से ही कुंडार की ओर दृष्टि उठाने का साहस किसी को न था। कुछ वर्षों पश्चात् सम्राट जयभद्र के पृथ्वीपति बनने के अभियान की आंच कुंडार तक भी पहुँच गई। सम्राट ने अर्थला से युद्ध छेड़ दिया। अर्थला का मुख्य मित्रराज्य होने के कारण कुंडार भी युद्ध में कूदा। सम्राट की सेनाएँ कुंडार में संगम तट तक घुस आयीं। कुंडार को संकट में देख काण ने भूमि सिद्धि का रौद्र रूप धर कर हाहाकार मचा दिया। उन्होंने अकेले ही चौथाई सेना काट डाली। संगम से लेकर काशी तक सारी गंगा रक्त और मांस के लोथड़ों से भर गई। उस संग्राम को रक्तगंगा -संग्राम कहा गया। युद्ध में काण ऐसे लड़े, मानों उनकी दो भुजाएं न होकर सहस्त्रों भुजाएं हों, तभी से लोग उन्हें 'सहस्त्रबाहु' अर्थात् हजारों भुजाओं वाला कहने लगे। उस युद्ध में सम्राट की हार हुई, परन्तु गंगा में समाये युद्ध के भयावह दृश्य को देखकर काण ने पुनः भूमि सिद्धि प्रयोग न करने का संकल्प लिया। रक्तगंगा संग्राम के बाद काण सेनाध्यक्ष का पद त्याग कर अज्ञातवास जाने लगे, परन्तु महाराज चक्रधर के बहुत मनाने से उन्होंने कुंडार के संरक्षक का पद ग्रहण किया। संरक्षक का पद किसी भी राज्य का सबसे सम्मानित पद माना जाता है। पद ग्रहण करने के बाद उनका अधिकतर समय आध्यात्मिक साधना में ही बीतता था ....''

तभी उग्रकेतु के हाथ पर वर्षा की मोटी बूंद गिरी। वर्षा इतनी तीव्र हो गई थी कि उनको आड़ देने वाले वृक्ष ने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। सामने थोड़ी ही दूर पर मुख्य शिल्पकार का अस्थायी कक्ष था। उग्रकेतु, विधान और सत्तू को लेकर कक्ष में पहुंचा। कक्ष खाली था, कोने में रखे लकड़ी के पीढ़ों पर बैठने के पश्चात् उग्रकेतु ने आगे बताना प्रारम्भ किया -

''आज से पांच वर्ष पहले राजकुमार सुदास का युवराज्याभिषेक हुआ। युवराज्याभिषेक के एक माह पश्चात् राजकीय कार्य से महाराज अमरखंड चले गये। तब युवराज सुदास ने कार्यवाहक राजा का पद संभाला। कार्यभार संभालते ही तीन दिनों के अन्दर राजकोष से भारी मात्रा में धन निकाला गया। पूरे कुंडार से तीन महीने में एकत्रित किया गया कर, सुदास ने तीन दिन में ही निकाल लिया। प्रभारी राजा को राजकोष का सीमाबद्ध उपयोग करने का अधिकार है, अतः सीमा समाप्त होते ही राजकोष बंद कर दिया गया। धन कहाँ उपयोग किया जा रहा, इसकी सूचना किसी को न थी। सुदास ने राजकोष से और धन निकालना चाहा, परन्तु कोषाध्यक्ष ने मना कर दिया, तो उसने बलपूर्वक धन निकाल लिया। यह

सूचना जब आदरणीय काण को लगी, तो उन्होंने राजकोष का अधिकार स्वयं ले लिया। सुदास ने उन्हें राजा का विद्रोही बताकर मृत्युदंड देने का आदेश दिया। परन्तु काण को स्पर्श करने का साहस किसी को न था। राजकोष से धन न निकलता देख सुदास ने अपने अधिकार का प्रयोग कर पूरे कुंडार से जबरन कर वसूलने का आदेश दिया। उसने सन्देशवाहक गरूड़ों को मरवा दिया, ताकि महाराज तक संदेश शीघ्रता से न पहुँचाया जा सके। कुंडार की वह प्रजा जो कर की सीमा में नहीं आती थी, उनसे भी बलपूर्वक कर वसूला गया। जो कर देने में विरोध करे, उसे मृत्युदंड देने का आदेश था। उस कर वसूली में हजारों की निर्मम हत्या की गयी। हमारी सूचनाओं के अनुसार संभवतः उसी समय आपके पिता की भी हत्या हुई थी...''

उग्रकेतु कुछ क्षणों के लिए रुका, उसे बगल में बैठे विधान के श्वासों की तेज गति सुनाई दे रही थी।

उसने पुनः आरम्भ किया - ''सुदास के इस दुष्टतापूर्ण व्यवहार से सारा कुंडार आश्चर्यचकित था। जबरन कर वसूलने के बाद भी उसे धन की पूर्ति नहीं हुई, तो वह पुनः राजकोष की ओर मुड़ा, परन्तु काण के रहते धन निकालना संभव नहीं था। अतः उसने उन पर महाभियोग चलाने का आदेश दिया। विधि में बंधा कुंडार, प्रभारी राजा के आदेश से उन पर महाभियोग चलाने के लिये बाध्य था। आदरणीय काण अत्यंत दुःखी हो गए और कुंडार त्यागने का निर्णय ले लिया। सभी ने उन्हें महाराज के लौटने तक प्रतीक्षा करने को कहा, परन्तु वे माने नहीं। उन्होंने कहा कुंडार में उनकी भूमिका समाप्त हो चुकी है, फिर वे कुंडार त्यागकर अज्ञातवास चले गये। महराज के लौटने पर सुदास ने उन्हें भी बंदी बनाने को कहा, परन्तु महाराज के आदेश पर सुदास को कारागार में डाल दिया गया। कुंडार का एकमात्र भावी उत्तराधिकारी और कुंडार के सम्मान को ध्यान में रखते हुये बुरी मानसिक अवस्था को कारण बताकर सुदास को क्षमादान दे दिया गया और आदरणीय काण की खोज करने अन्य राज्यों में गुप्तचर भेजे गए।

कुछ दिनों पूर्व गुप्तचरों द्वारा ज्ञात हुआ कि सुदास, सम्राट जयभद्र की सैन्य सहायता से तख्ता पलटने की योजना बना रहा है। भाग्य से उसी समय आदरणीय काण को भी खोज निकाला गया। वैसे तो आदरणीय काण ने युद्ध त्याग दिया था, परन्तु उनकी उपस्थिति मात्र से ही कुंडार को बल मिल जाता। महाराज ने मुझे आदरणीय काण को वापस कुंडार लाने भेजा। दुर्भाग्य से इस बारे में सुदास को भी भनक लग चुकी थी। उसे लगा अगर काण वापस आये, तो संभवतः सम्राट जयभद्र अपनी सैन्य सहायता रोक लें, तब उसकी योजना विफल हो जायेगी। अतः उसने अपने विश्वासपात्र अंगरक्षकों को भेजकर उनकी हत्या करवा दी।

आज राजसभा में उस पर महाभियोग चलाकर अघोषित समय के लिये कारावास का दंड दे दिया गया।''

उग्रकेतु ने विधान की ओर देखा, उसके माथे पर पड़ रहे बल को दूर से भी देखा जा सकता था।

''क्या उस दुष्ट के लिये मात्र कारावास का दंड पर्याप्त है?'' विधान ने भौंहें सिकोड़ कर पूछा।

''आज राजसभा में विधि मंत्री सारांश ने जिन रहस्यों से पर्दा उठाया, उसके बाद यह निर्णय करना कठिन है कि सुदास को क्या दंड दिया जाए।''

सत्तू और विधान की आँखें प्रश्नवाचक हो उठीं।

''कुंडार को दानव-नीति में फंसाया गया है।'' उग्रकेतु ने कहा, ''जम्बूद्वीप के पश्चिम में संथार नामक दानव देश है। दानव जाति मुख्यतः व्यापारी जाति है,जो मसालों और चूर्णों का व्यापार करती है। दानव अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिये दानव-नीति अपनाते हैं। इस नीति के तहत वे किसी राज्य में मसालों और चूर्णों का व्यापार करने के लिये प्रवेश करते हैं। वहां के राजा को मसालों और चूर्णों की विशेषताएँ बताते हैं, जैसे -उनके मसालों के प्रयोग से भोजन स्वादिष्ट हो जाता है और चूर्ण को खिलाने से उनके युद्धक घोड़े ज्यादा क्षमतावान हो जायेंगे, ऐसी तरह-तरह की विशेषताएं बता डालते हैं तथा मोटा कर देने का लोभपूर्ण प्रस्ताव रखते हैं। प्रारम्भ में प्रयोग करने की अनुमति लेकर निःशुल्क मसालेयुक्त भोजन बांटते हैं। कुछ समय पश्चात् मसालों की आड़ में वे राज्य के युवाओं को गुप्त रूप से नशीले पदार्थ बांटने लगते हैं। प्रारम्भ में नशीले पदार्थ भी निःशुल्क ही दिये जाते हैं और लत लग जाने के बाद उनसे मोटा धन वसूलते हैं। ये नशीले पदार्थ मनुष्य को इतना लती बना देते हैं कि वे दानवों के दास बन जाते हैं। उन नशीले पदार्थों को प्राप्त करने के किये लती मनुष्य कुछ भी देने को तैयार हो जाता है। दानवों का मुख्य लक्ष्य उस राज्य का युवराज होता है क्योंकि वह राजकोष से धन निकाल सकता है। अतः वे उसे अधिक स्तर का महंगा नशीला पदार्थ देते हैं, ताकि राजकोष शीघ्रता से खाली हो। इस प्रकार धीरे-धीरे वे उस राज्य का सारा धन खींच कर उसे आर्थिक रूप से कमजोर बना देते हैं, फिर उस पर आक्रमण कर अपना अधिकार ज़माने में देर नहीं करते। नशे में धुत और आर्थिक रूप से कमजोर राज्य अधिक प्रतिरोध नहीं कर पाते। दानवों ने इसी नीति पर चलते हुए पश्चिमी देशों में अपना साम्राज्य विस्तार किया है।

अमरखंड ने उनकी इस नीति को भांप लिया और सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में चेतावनी प्रसारित कर दी कि कोई भी राज्य दानवों से व्यापारिक संबंध न रखे। उस चेतावनी के बाद अधिकतर राज्यों ने दानवों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा

दिया। प्रतिबंध के बाद राजनीतिक रूप से प्रवेश करना असंभव था और भौगोलिक रूप से प्रवेश करने की राह में अर्थला थी। अर्थला को पार किये बिना वे जम्बूद्वीप में प्रवेश नहीं कर सकते थे। अतः उन्होंने अर्थला पर आक्रमण भी किया, परन्तु सफल नहीं हुये। वर्षों से दानव जम्बूद्वीप में प्रवेश करने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं। जम्बूद्वीप में प्रवेश न होता देख, उन्होंने कुंडार को अप्रत्यक्ष रूप से लक्ष्य किया, क्योंकि कुंडार सबसे समृद्ध और अर्थला का मुख्य सहयोगी है। प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सम्राट जयभद्र के सहयोग से दानवों ने सुदास को नशीले पदार्थ उपलब्ध कराये तथा सुदास ने सारा राजकोष उन नशीले पदार्थों को प्राप्त करने में ही लुटाया था। इन मादक पदार्थों के सेवन से मनुष्य दिन में सामान्य रहता है, परन्तु रात्रि होते ही उसे पदार्थ की एक निश्चित मात्रा का सेवन आवश्यक होता है, अन्यथा वह अत्यंत विचलित हो उठता है। कोई मस्तक पटकता है, कोई अपना हाथ चीर लेता है, कोई लकड़ी चबाता है, तो किसी को दृश्य दिखने का भ्रम होता है, यही अवस्था पिछले छः वर्षों से सुदास की भी है।

सुदास प्रवृत्ति से थोड़ा दुष्ट अवश्य है, परन्तु उसके कृत्यों के लिये दानव अधिक दोषी हैं। सुदास ने वही किया, जो नशे का लती कोई भी व्यक्ति करता है, परन्तु वे कपटी दानव योद्धाओं की भांति युद्ध भूमि में लड़ने के स्थान पर मनुष्य को खोखला करने की नीति अपनाते हैं। यह तो कुंडार का भाग्य था कि विधि मंत्री सारांश ने समय रहते कठिन छानबीन कर सारी घटनाओं से अवगत करा दिया।''

उग्रकेतु शांत हो गया, उसने विधान और सत्तू की ओर देखा। विधान के मुख पर सपाट और सत्तू के मुख पर कौतूहल के भाव थे। बाहर वर्षा रुक गई थी। सभी बाहर निकल शांति से अपने-अपने घोड़ों पर बैठकर विश्राम कक्ष की ओर चल दिए।

***

वह कक्ष में लेटा हुआ था, आँखें बंद थीं, परन्तु वह निद्रा में नहीं था। उसके मन का अन्तर्द्वन्द्व उफान पर चढ़ रहा था। वह जिसे दंड देने आया था, वह तो स्वयं ही दंड पा रहा है। उसे मृत्यु देकर वह उसकी यातना को कम नहीं करना चाहता ..... अब तक का जीवन उसने प्रतिशोध की अग्नि में जिया था। अपने पिता के हत्यारे को दंड देना ही उसके जीवन का लक्ष्य था, तो क्या उसके जीवन का लक्ष्य समाप्त हो गया। उसके पिता की हत्या का वास्तविक दोषी कौन है?.....सुदास?.....अथवा उसको नशीले पदार्थ देने वाले दानव?

.....परन्तु दानव तो सदैव से यही नीति अपनाते आये हैं, यह नीति तो वर्षों पुरानी होगी .....तो क्या इस नीति को बनाने वाला प्रथम व्यक्ति दोषी है? ..... अथवा इन नशीले पदार्थों को बनाने वाला सृष्टिकर्ता?.....कौन है वास्तविक दोषी?.....हत्या करने वाला वह सैनिक?..... अथवा उस तलवार को बनाने वाला लोहा, जिसको उसके पिता के वक्ष में उतारा गया था .....कौन है दोषी? .....कौन? ..... सुदास?.....दानव? .....सृष्टिकर्ता? .....सैनिक? .....लोहार?...कौन ...कौन ..?

विधान एक झटके से उठ कर बैठ गया। उसका शरीर गर्म और मस्तक फटा जा रहा था। वह कक्ष में अकेला था। कक्ष की दीवारें उसे घुटन महसूस करा रही थीं। वह बाहर निकला। संध्या बीतने वाली थी, आकाश में अभी भी कहीं-कहीं मेघ थे। बाहर सत्तू रागा के साथ खेल रहा था। विधान बिना कुछ बोले एक ओर चल दिया। पर रागा ने उसे देख लिया, वह भागता हुआ उसके पास आया, पैरों को सूँघ कर पूंछ हिलाते हुए उसकी परिक्रमा करने लगा।

''भईया! कहाँ जा रहे हो? सत्तू ने आते हुए पूछा, ''रात्रि होने वाली है, आगे वन है और वर्षा कभी भी प्रारम्भ हो सकती है?'' विधान कुछ न बोला और आगे बढ़ गया। विधान जब भी व्यथित होता था, वह वन जैसे किसी घने-सघन स्थान पर चला जाता और घंटों वहीं बैठा रहता। सत्तू, विधान के इस व्यवहार से परिचित था, अतः वह भी रागा के साथ उसके पीछे चल दिया। कुछ ही देर में वन आ गया। वन की सीमा पर सत्तू क्षण भर के लिए रुका, आकाश की ओर देखा, काले मेघों के कारण प्रकाश कम होता जा रहा था। वह बिना कुछ बोले पुनः विधान के पीछे चल दिया। चलते-चलते वे वन में अन्दर तक आ गए। एक उचित स्थान देखकर विधान रुका और वृक्ष के नीचे बैठ गया। वह लंबे क्षणों तक चुप रहा। सत्तू उसके बोलने की प्रतीक्षा करता रहा।

''कल प्रातः हम घर लौट जायेंगे।'' विधान ने लंबी चुप्पी तोड़ी।

''लौट जायेंगे! अर्थात्?'' सत्तू थोड़ा चौंका, ''हम लोग तो अर्थला जा रहे थे।''

''मैं मात्र सुदास के लिए कुंडार तक आया था।''

''परन्तु आपने रूपक को वचन दिया था कि आप अर्थला चलेंगे।''

''वचन नहीं दिया था, मात्र हामी भरी थी।''

''भईया! उग्रकेतु की कथा सुनकर आपको नहीं लगा कि यह संसार कितना विशाल है, यदि अवसर मिला है, तो हमें यह संसार देखना चाहिए.....क्या आप भूल गए? .... बचपन में हमने तय किया था कि बड़े होकर हम सारा संसार घूमेंगे ...भांति-भांति के लोगों से मिलेंगे.....नए फल खायेंगे .... नई धरती देंखेंगे...''

विधान कुछ न बोला, बस चुपचाप बैठा रहा। तभी मेघों ने भयंकर गर्जना की और रागा भौंकने लगा। पहले तो लगा गर्जना से विचलित होकर भौंक रहा है, परन्तु जब वह इधर-उधर देखते हुए जोर से भौंकने लगा, तो विधान और सत्तू भी चौकन्ने होकर देखने लगे। विधान के पास शस्त्र के नाम पर कुछ भी न था। उसने जल्दी से एक मोटा डंडा तोड़ा और सत्तू को संकेत किया। सत्तू अपने दायीं ओर के वृक्ष पर सरपट चढ़ गया। पेड़ पर चढ़े सत्तू ने आँखें केन्द्रित कर देखने का प्रयास किया, परन्तु आस-पास झाड़ियाँ इतनी बड़ी और सघन थीं कि कम प्रकाश में कुछ नहीं दिखा। अगले ही क्षण विधान के सामने, बायीं ओर तथा पीछे की ओर से, ऊपर से नीचे तक लबादा ओढ़े तीन लबादाधारी प्रकट हुए। काले लबादे ने पूरे शरीर को ऐसे ढक रखा था कि उनके हाथ भी नहीं दिख रहे थे। तीनों ने विधान को घेर लिया, रागा भौंक -भौंक कर अपनी सुरक्षा बनाने का प्रयास कर रहा था, परन्तु उनके पास जाने का साहस नहीं दिखा पा रहा था। धीरे-धीरे लबादाधारियों ने अपना घेरा छोटा करना प्रारम्भ कर दिया। विधान डंडा लेकर अपने ही स्थान पर फुर्ती से गरदन इधर-उधर कर सतर्कता से खड़ा था।

थोड़ा और समीप आने पर उन्होंने एक झटके से अपना लबादा गिरा दिया। उनका शरीर देखकर वृक्ष की डाल पर खड़े सत्तू के शरीर में सिरहन दौड़ गई। उनको देखकर लगता था, मानों किसी शव को भूमि खोदकर निकाल लिया गया हो। वस्त्र के नाम पर पूरा शरीर तथा मुख तेल से सनी पट्टियों से ढका हुआ था, आँखों की पुतली ही एकमात्र जीवित अंग था जो बाहर से दिखता था, उसमें भी पुतली का काला भाग सफेद था। उनके हाथों में चीथड़ों से लिपटे डंडे थे और कमर में छोटी तलवार एवं छुरे लटक रहे थे। अगले ही क्षण तीनों विधान पर टूट पड़े। दोनों पक्ष डंडों का प्रयोग तलवार की भांति कर रहे थे। रागा भी भौंकने में पूरा जोर लगाये हुए था, परन्तु उसकी उपस्थिति उन पर कोई प्रभाव नहीं डाल पा रही थी। उनके युद्ध-कौशल को देखकर विधान ने अनुमान लगा लिया कि ये सामान्य सैनिकों की श्रेणी के नहीं हैं। युद्ध करते-करते विधान ने एक के मस्तक पर डंडा दे मारा। उस भीषण प्रहार से उसका मस्तक घूमने लगा, कुछ क्षणों के लिए शत्रु को असावधान देखकर विधान ने उसके पेट पर एक जोरदार लात जड़ दी। शक्तिशाली प्रहार खाकर पीछे की ओर लड़खड़ाते हुए वह उसी वृक्ष से टकराया, जिस पर सत्तू चढ़ा था।

असहाय पड़े शत्रु को देखकर रागा को कुछ साहस आया, वह समीप जाकर भौंकने लगा। लबादाधारी के लिए उसका ध्वनि प्रदूषण असहनीय हो गया। उसने अपनी तलवार निकाली और तने का सहारा लेकर खड़ा होने लगा। सत्तू ने अपनी कमर टटोली, शस्त्र के नाम पर धोती में बंधा लट्टू निकला।

उसने झट से लट्टू निकालकर उस पर डोरी चढ़ा ली। तब तक वह लबादाधारी पूरी तरह खड़ा हो चुका था और ध्वनि प्रदूषण के स्रोत को समाप्त करने, रागा की ओर बढ़ रहा था। लट्टू फाड़ने की प्रतियोगिता में सत्तू आज तक पराजित नहीं हुआ था। अगले ही क्षण रागा की ओर बढ़ता शत्रु सत्तू की डाल के नीचे पंहुचा। सत्तू ने उसकी खोपड़ी को लक्ष्य कर लट्टू पटक दिया। सनसनाते लट्टू ने शत्रु के मुंड पर भीषण चोट की। पहले से ही चकराते मस्तक पर दोबारा प्रहार, वह लबादाधारी नहीं सह सका और मूर्छित होकर गिर पड़ा। उसके मूर्छित होते ही रागा का साहस आसमान पर पहुँच गया और वह उसकी पट्टियाँ नोचने लगा।

विधान से लड़ रहे दोनों लबादाधारियों में से एक ने लड़ना छोड़कर मूर्छित पड़े लबादाधारी की ओर बढ़ा और रागा को भगाने के लिए कमर में लटका छुरा निकाल कर फेंक मारा, मगर रागा की फुर्ती ने उसे बचा लिया और वह भौंकता हुआ भाग गया। उस लबादाधारी ने वृक्ष पर खड़े सत्तू को घूरा, फिर पट्टियों में न जाने कहाँ छुपाए हुए चकमक पत्थर को निकाल कर छुरे से रगड़ दिया। चकमक से निकली चिंगारियों के, तेल से सनी पट्टियों पर गिरते ही पूरा शरीर अग्नि का पिंड बन गया। यह दृश्य देखकर सत्तू एकदम से हकबका गया और वृक्ष से गिर पड़ा। विधान से लड़ रहे लबादाधारी ने भी उसी प्रकार अपने शरीर पर अग्नि लगा लिया। अग्नि के कारण उस पर आक्रमण करना कठिन हो गया।

दूसरे लबादाधारी से सत्तू सामना कर रहा था। उसने मूर्छित पड़े लबादाधारी की तलवार अवश्य उठा ली थी, परन्तु प्रयोग करने के बजाय इधर-उधर भागता हुआ अपने प्राण बचा रहा था। तेजी से इधर-उधर भागने के फेर में वह एक वृक्ष से टकरा गया। टक्कर जोरदार थी, उसका मस्तक फट गया। चकराते हुए मस्तक को पकड़ कर वह वहीं बैठ गया और जलता हुआ लबादाधारी उसकी ओर बढ़ने लगा। विधान ने देखा सत्तू के प्राण संकट में हैं, वह लबादाधारी सत्तू पर प्रहार करने ही वाला था। विधान ने लड़ना छोड़ क्षण भर के लिए ध्यान केन्द्रित किया और दायाँ पग भूमि पर जोर से पटका। दूसरे ही क्षण वह लबादाधारी हवा में उछल कर दूर जा गिरा, मानों कि उसके पैर के नीचे कोई विस्फोट हुआ हो। उसी क्षण दूसरे लबादाधारी को अवसर मिल गया। उसने विधान की पीठ पर डंडे से जोरदार प्रहार किया। डंडे का स्पर्श होते ही उसके शरीर को ऊर्जा का तेज झटका लगा। उस लबादाधारी ने डंडे को उसके शरीर से चिपकाये रखा। विधान का शरीर झटके खाता रहा, उसकी आँखें फैल गईं, मुख टेढ़ा होने लगा, नसें फूलने लगीं, सारा शरीर अकड़ने लगा, कुछ ही क्षणों में वह पूरी तरह निढाल होकर भूमि पर गिर पड़ा।

उसके गिरते ही उस लबादाधारी ने विचित्र सी आवाज निकाली, जिसे

सुनकर दूसरा लबादाधारी उठकर उसके पास आया और दोनों ने मिलकर विधान के शरीर पर जगह-जगह अपने डंडे स्पर्श कराए। विधान का सारा शरीर सुन्न और अकड़ा पड़ा हुआ था, डंडों के स्पर्श से मिल रहे झटके ही उसके शरीर को हिला पा रहे थे। वह अपनी चेतना बनाये रखने का भरसक प्रयास कर रहा था। धुंधलाती आँखों से उसने देखा कि लबादाधारियों ने अपने लबादे उठा लिए और उनको ओढ़ते ही शरीर पर लगी आग बुझ गई। विधान की आँख क्षण भर के लिए बंद हुई और जब पुनः खुली, तो वहां अपने सिर को संभालते सत्तू के अतिरिक्त और कोई नहीं था। चेतना बनाये रखने का उसका यह अंतिम प्रयास था, अगले ही क्षण उसके आगे अंधेरा छा गया। मेघों ने भयंकर गर्जना की और मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ हो गई।

सत्तू स्वयं को संभालते हुए मूर्छित पड़े विधान की ओर बढ़ रहा था, तभी दूर से रागा के भौंकने की आवाज सुनाई पड़ी। अगले ही क्षण ढेरों सैनिकों के साथ स्थूल प्रकट हुआ। वह भागता हुआ विधान के पास पहुंचा, उसके शरीर का निरीक्षण किया, फिर कुछ चूर्ण निकाल कर नाक के नीचे मल दिया। उसने सैनिकों को कुछ आदेश दिये। सैनिकों ने विधान को लादा और तेजी से चल दिये।

विधान को कक्ष में लिटाया गया, स्थूल थोड़ी-थोड़ी देर पर उसके हृदय के स्पंदनों का निरीक्षण करता तथा अलग-अलग चूर्ण उसके मुख में डालता रहता। कुछ ही देर में सिंहनाद और रूपक भी आ गये।

''आपातकालीन चिकित्सा की आवश्यकता है, अतिशीघ्र अर्थला जाना होगा...'' स्थूल ने घबराई आवाज में कहा।

सिंहनाद ने उग्रकेतु की ओर देखा।

''मैं जाने की व्यवस्था करता हूँ।'' कहकर उग्रकेतु तेज कदमों से चला गया।

स्थूल ने सत्तू के मस्तक पर औषधि लगा दी और खाने को कुछ चूर्ण दिए, फिर सत्तू ने सारी घटना विस्तार से बताई। उन लबादाधारियों के बारे में सुनकर सिंहनाद का मुख और गंभीर हो उठा।

थोड़ी देर में आठ घोड़ो और छः पहियों वाले रथ के साथ उग्रकेतु लौट आया। चेतनाशून्य पड़े विधान को उठाकर रथ पर लिटाया गया, उसके साथ स्थूल, सत्तू और रागा भी रथ पर चढ़े। सबसे आगे सफेद घोड़े पर बैठे सिंहनाद ने आदेश दिया और सारा दल सिद्धिधारक को लेकर अर्थला के लिए चल पड़ा।

उग्रकेतु ने बाएं कंधे पर बैठे सन्देशवाहक गरुड़ को आपातकालीन संदेश दिया, मांस का छोटा टुकड़ा खिलाया और अर्थला के लिए उड़ा दिया। घनघोर

वर्षा और चंद्रमा के प्रकाश में नीची उड़ान भरता गरुड़ रथ के ऊपर से उड़ा, पीछे मुड़कर क्षण भर के लिए रथ में लेटे सिद्धिधारक को देखा, फिर गरदन सीधी कर एक तेज आवाज मारी और अपने पंखों में शक्ति भरकर अर्थला के लिए उड़ चला।

" Published July 19th 2016 "

BUY ARTHLA

Amazon - http://goo.gl/M3b8r2
Flipkart - http://goo.gl/FYQTxw

Watch Official Intro Teaser
www.youtube.com/watch?v=UMXrLbdcUQY

Join on Facebook
www.facebook.com/authorvivek.official/

For more details
www.authorvivekkumar.com